#### जैनसाहित्यसंशोधक**प्रन्य**नाला

### आचाराङ्ग-सूत्रम्

मुलपाठ-विशिष्ट पाठभेद-शब्दकोष-समन्वितम्

(प्रथमः श्रुतस्कन्धः)

जैन साहित्य संशोधक समिति

पूना शहर, (दक्षिण)



JAINA-SAHITYA-SAMSODHAKA-GRANTHAMALA

### ACHARANG-SUTRAM

[ FIRST SRUTASKANDHA.]

Text in Devanagari with various readings and a glossary

Based upon the German edition of Dr Walter Schubring, Leipzig.

Published by

THE JAINA SAHIIYA SAMSODHAKA SAMITI.

Poona City ( India )

1924

Mahavira Samvat 2450 ]

[ Vikrama Samvat 1980.

# पुण्य-स्मरण अने धन्यवाद

·->> <<--

श्री भ्रम्य प्रकाशित करवा मार. जमहाराः । नतामा स्वर्गम्य महत्रातिदाम साह्यचिद्रती धरण्यत्वी आविष्यः। सर्वश्रीतः, पाताना प्रताना पृथ्यस्परणार्थे त द्वारा प्रदासन्दा असी रुटने बदक तमन धन्यताद सर छ

## आचाराङ्ग-सूत्र

### आचाराङ्ग-सूत्रम्

मृलपाठ-विशिष्ट पाठमेद-शब्दकोष-समन्वितम्

( प्रथमः श्रुतस्कन्धः )

-4949 . 6464-

जर्मनराष्ट्रनिवासि-डॉक्टर-इत्युपाधिधारि-वास्टर शुद्धिंग-नामधेयेन विद्वद्धरेण संद्रोधितं, जर्मन-देशान्तर्गत-लाइएजिग-नगर संस्थित-प्राच्यविद्या-गवेषक समितिद्वारा रोमनलिप्यां प्रकटिमृतं च पुस्तकमनुस्त्य

मारतवर्षान्तर्गत-

पुण्यपत्तन-संस्थापित

### जैन साहित्य संशोधक समिति

नामकसस्थायाः सञ्चालकेन देवनागराक्षरैः प्रकटी कृतम्

प्रकाशक — **मुनि तिलकाविजय,** भारत जैन विद्यालय, पूना शहर.

सदक —लक्ष्मण भाऊराव कोकाटे, इतुमान प्रेस, २०० सदाशिव पेट, पूना शहर.

### ॥ आयारंग-सुत्तं॥

### ॥ ' बम्भचेराइं ' नाम पढमो सुयक्खन्धो ॥ स त्थ प रि ना

8-8

(१) सुय मे, आउस, तेण भगवया एवमक्खाय.-

बहुमेगोर्स नो सला भवइ, (२) त-जहा 'पुरिश्वमाओ वा दिमाओ जागओ अहमित, दाहिणा-क्षे वा दिसाओ ..., पच्चित्यमाओ वा दिमाओ , उत्तराओ वा दिसाओ ..., उहुाओ वा दिसाओ ..., अहेदिमाओ वा ..., अल्लाश्वमाओ वा दिसाओ वा अणुदिमाओ वा आगओ अहमिते — एवमेगोर्म नो नाय भवइ (३) 'अश्यि मे आया उववाइए, नित्य मे आया उववा 5 इए १ के अह आसी के वा इओ चुओ इह पेच्चा भिवस्मामि १ '। (४) से उज पुण जाणेग्जा सह मम्मुइयाए पर-वागरणेण अलेमि वा अत्तिए सोच्चा, स-जहा .— 'पुरिश्वमाओ वा दिमाओ आगओ अहमि जाव अल्यारीओ वा दिसाओ वा अणुदिसाओ वा आगओ अहमि '—एवमेगेमि नाय भवइ '— ' अश्यि मे आया उववा अणुदिसाओ वा आगओ अहमि '—एवमेगेमि नाय भवइ '— ' अश्यि मे आया उववा वाइए; जो इमाओ दिसाओ अणुदिसाओ वा अणुमचरइ, सव्वाओ दिमाओ सव्वाओ अणु 10 हिमाओ सोऽह '।

( ५ ) से आया-वाई लोगा-वाई कम्मा-वाई किरिया-वाई य ।

करिस्स च'ह काराबेश्स च'ह करओ याचि समणुने भविस्सामि'—एयावन्ती सन्वाबन्ती होगिस कम्म-समारम्भा परिजाणियन्वा भविन्त । (६) अपरिनाय कम्मे सन्त अय पुरिसे, जो इमाओ देसाओ वा अणुदिसाओ वा अणुमचरह, सन्वाओ दिमाओ सन्वाओ अणुदिसाओ सहेह, 15 प्रणेग-रूबाओ जोणीओ सन्धेह, विरूव-रूबे फामे पिंडसबेएह। (७) तत्थ खन्त भगवया रिजा पवेह्या हमस्स वे'व जीवियस्म परिवन्दण-माणण-प्यणाए, जाइ-मरण-मोयणाए दुक्स-पिंडाय-हेड-एयावन्ती सन्वावन्ती लोगिस कम्मसमारम्भा परिजाणियन्वा भवन्ति । क्से ए लोगिस कम्म-समारम्भा परिजाया भवन्ति ।

( २ ) सन्ति पाणा पुढो-सिया। लज्जमाणा पुढो पास ।

" अजगारा मो " ति एगे पवयमाणा ।

जिमण विरुव-रुवेहि सत्थेहि पुढवि-कम्मसमारम्भेण पुढवि-सत्थ समारम्भमाणे अने 5 व' णेगरू वे पाणे विहिंसर--( ३ ) तत्थ खलु भगवया परित्रा पवेडया इमस्स चे'व जीवि-परिवन्दण-माणण-प्यणाए, जाइ मरण-मोयणाए दक्ख-पाडिघाय-हेड — से पुढवि-सत्थ समारम्भइ अनेहि वा पुढवि-सत्थ समारम्भावेह अने वा पुढवि-सत्थ समार-म्भन्ते समणुजाणहः ( ४ ) त से अहियाए, त से अबोहीए । से च सबुउझमाणे आयाणीय, समुद्राए - सोच्चा खलु भगवओ अणगाराण वा अन्तिए इह्मेगे।सं नाय भवह . एस खलु 10 गन्थे, एस खल्ल मोहे, एस खल्ल मारे, एस खल्ल नरए ।

इच्चत्थ गढिए लोए !

जिमण विरूव-रूवेहिं सन्थेहिं पुढवि-कम्मसमारम्भेण पुढवि-सन्थं समारम्भमाणे अने वणे'ग-रूवे पाणे विहिंसइ---

- ('१) से बेमि अप्पेने अचमक्ने,अप्पेने अचमच्छे;अप्पेने पायमक्ने,अपेने पायमच्छे; . . 15 गुप्फ .. जघ ... जाण .. करु कडि ... नामि .. उयर . पास ....पिट्टिं .. उर . हियय ... भग.. खन्ध....बाहु.. इत्थ.. अगुलिं. ..नह . गीव. . हणु... होट्ट.. दन्त... जिब्भ ... तालु .... नलं .... गण्ड .... कण्ण ... नास .... अच्छि .... भमुह . निलांड . सीस ....: अप्येगे सपमारए अप्पेगे उद्ववए ।
- (६) एन्थ सत्थं समारम्भमाणस्त इचेए आरम्भा अपरिमाया भवन्ति, एत्थ सत्थ 20 समारम्भमाणस्त इचेए आरम्भा परिवाधा भवन्ति । न परिवास मेहावी नेव सय पुढवि-सन्धं समारभेजा नेव'नेहि पुढवि-सत्थ समारम्भावेजा नेव'ने पुढवि-स थ समारभन्ते समण्यताणेजा। जस्ते'ए पुढवि-कम्म-समारम्भा परिलाया भवन्ति, से ह मुणी परिलाय-कम्मे -- ति बेमि ॥

8-₹

(१) से बेमि से जहा वि---

अणगारे उज्ज्कडे नियाग-पडिवने अमाय कुन्वमाणे वियाहिए।

(२) जाए सद्धाएँ निक्खन्तो, तमेव अणुपालियाः

वियहित विसोत्तिय

पणया वीरा महा-बीहिं

लोगं च आणए अभिसमेचा अकुओभय।

(३) से बेभि -ने'व सय लोग अब्भाइक्खेज्जा, नेव अत्ताण अब्भाइक्खेजा। जे लोगं 30 मब्भाइक्लइ, से अत्ताण अब्भाइक्लइ, जे अत्ताण अब्भाइक्लइ, से लोगं अब्भाइक्लइ । (४-६) 'लज्जमाणा...(यथा प॰ २-१३, ननर पुढिब स्थाने उदय भणनीय)..

बिहिंसर-

Ţ

(७) से बेभि: सन्ति पाणा उदय-निस्तिया जीवा अणेगा ।

इह च खलु भी अणगाराण उदय जीवा वियाहिया ।

सत्य चेत्य अणुवीइ, पास पुढी सत्य पवेदय :

अद् वा अस्त्रा'याण .

"कष्पइ में कष्पइ में पाउ",

5

अदु वा विमूसाए पुढो सत्थाई विउट्टन्ति । एत्थ वि तार्स नो निकरणाए ।

(८) एत्थं सत्थं ... (यथा २, १९-२२. नवर पुढ़िव स्थाने उदय मणनीय)...परिशाय-

**१**—४

(१-२) से बेमि ने'द सय... (यथा २, २९-३०)... छोगं अब्धाइक्लइ । जे दीहलोग-सत्थस्स खेयने, से असत्थस्स खेयने; जे असत्थस्स खेयने, से दीहलोग-सत्थस्स खेयने । 10 (३) वीरोहिं एय अभिमृय दिट्ठ

सजए हैं सया जए हिं सया अध्यमते हिं.

जे पमते गुणहिए, से हु दण्डे पवुचह ; तं परिचाय मेहाबी " ह्याणि नो, जमह पुञ्चमकासी पमाएण "।

15

(४-५) <sup>6</sup> लजमाणा . . (यथा २, २-१३ नवर पुरुषि स्थाने सगणि भणनीय ).... विडिंसइ—

(६) से बेमि : मन्ति पाणा पुढवि-निस्सिया तण-निस्सिया पत्ति स्सिया कह-निस्सिया गोमय-निस्सिया कथवर-निम्मिया, 'सन्ति सपाइमा पाणा, आहच सपयन्ति य'। अगाणं च खडु पुट्ठा एगे सघायमावज्ञन्ति, जे तत्थ परि-20 याविज्ञन्ति, ते तत्थ उद्दायन्ति ।

(७) एत्थ्र सत्थ (प्रधा २, १९-२२, नवर पुढिच स्थाने अगाणि भणनीय)....

परिनाय-कम्मे-ति बेमि॥

4-9

(१) ''त नो करिस्सामि समुद्राए मत्ता महम अभय विक्ता।

25

न जे नो करए, एसोवरए; एत्थोवरए एस अणगारे ति प्युच्चर।

(२) जे गुणे से आवर्ड, जे आवर्ड से गुणे ज्हु अह तिश्यि पाईण पासमाणे रूदाइ पासइ, सुणमाणे सहाइ सुणइ;(३) ज्हु अह तिश्यि पाईण मुच्छमाणे रूदेयु मुच्छह सहेसु यादि ।

एन्थ् अगुत्ते अणाणाए । एस लोए वियाहिए

पुणो-पुणो गुजासाए वक-समायारे पमते गारमावसे । (४-५) 'इज्जमाणा...(अपा २,१-१३ नवर बुद्धावे स्थाने खणस्सा भणनीय )...विहिंसर---

(६) से बेभि रमं पि जाइ घम्मय, एय पि जाइ-घम्मय। इमं पि बुद्धि-घम्मयं, एय पि बुद्धि-घम्मयं, .. चित्तमन्तय.. छिन्न मिलाइ....आहारगं....अनिच्चय....असाद्यं.... चयावचइय....विपरिणाम-धम्मय।

3-8

(१) से बेमि: सन्ति'मे तसा पाणा, त-जहाः—अण्डया पोयया अराज्या रसया संसेयया सम्मुच्छिमा जिभ्या जववाहया।

#### एस ससारे ति पवुच्चइ

(२) मन्दस्स अविजाणओ ।

निज्झाहता पडिलेहिता पत्तेय परिणिव्वाण

सन्वेसि पाणाणं, सन्वेसि भृयाण, सन्वेसि जीवाण, सन्वेसि सत्ताण असाय अपरिणिन्वाणं । महत्रभय दुक्ख ति वेमि ''।

तसन्ति पाणा पदिमो दिसासु य।

'तःथ-तःथ पुढो पाम आउरा परियावेन्ति । (३) सन्ति पाणा पुढो-सिया । 15 (४) 'लज्जमाणा .... (यथा २,२-१३ नवर पुढवि स्थाने तसकाय भणनीय) .... विहिसह—

(५) से बेभि अप्येगे अचाए हणन्ति, अप्येगे अजिणाए वहन्ति,....मसाए....सोणि-याए...., एव हिययाए पिताण वसाए पिच्छाण पुच्छाण वालाए सिंगाए विसाणाए दन्ताए दाढाए नहाए ण्हारुणीए अट्टीण अट्टिभिजाण-अट्टाण अण्डाण; अप्येगे 'हिंशिस मे' ति वा वहन्ति, २० अप्येगे 'हिंसन्ति मे 'ति वा वहन्ति, अप्येगे 'हिंसिस्मन्ति मे 'ति वा वहन्ति।

(६) ए. थ स य... (यथा २,१९-२२ नवर पुढावि स्थाने तसकाय भणनीय) . पश्चिताय-करमे — ति बेमि ॥

2-5

#### (१) पह्र य एजस्स दुगुञ्छणाए । आयक दर्सा 'अहिय ' ति नचा ।

25 जे अज्ञत्स्यं जाणह, से बहिया जाणह; जे बहिया जाणह, से अज्ञत्य जाणह: एय तुळ अमेसि।

> इंद सन्ति-गया दिवया नावकस्तन्ति जीविजं। (२-३)' लज्जमाणा...(यथा २, २-१३ ननर पुढिब स्थाने वाउ भणनीय)....विद्विस्य-(४) से बेमि

> > सनित संपाइमा पाणा, आहच सपयन्ति य ।

फरिसं च खलु पुट्टा .... ( यथा ३, १९-२१ ) .... उद्घायन्ति । ( ५ ) एत्थ सत्य .... ( यथा २, १९-२२ नवर पुटिब स्थाने बाउ नणनीय ).... परिकाय-कम्मे—िति बेमि ॥

(६) एत्थ पि जाणे उवाईयमाणा

जे आयारे न रमन्ति,

5

आरम्भमाणा विणय वयन्तिः, छन्दोवणीया अज्ह्योववन्ना आरम्भसत्तां पकरेन्ति सग।

से बसुम सन्ब-समन्नागय-पन्नाणेण अप्याणेण अकरणिजा पाब कम्मन्तं नो अनेसि । (७) त परिनाय मेहावी ... (यथा २, २०-२२ नवर पुढिच स्थाने छाजीवनिकाय 10 भणर्गम) परिनाय-कम्मे—ति वेमि ॥

### हो ग वि ज ओ

₹--१

(१) जे गुणे से मूल-इाणे, जे मूल-इाणे से गुणे। इति से गुणद्वी

महया परियावेण वसे पमत्ते,

तं-जहाः— 'माया मे, पिया मे, भाया मे, भहणी मे, भज्जा मे, पुता मे, भूया मे, 15 सुरहा मे, सिह-समण-सगन्थ-सथुया मे, विचित्तोवगरण-परियट्टण-भोयण'च्छायण मे '; ' इच्हाथ गढिए लोए '। 'वसे पमते '

अहो य राओ परितप्पमाणे

कालाकाल-समुद्वाई सजोगद्वी अन्यालोभी आलुम्पे महसाकारे विनिविद-चित्ते

20

' एत्थ सत्थे पुणी-पुणी '।

(२) अप्प च खलु आउ इहमेगास माणवाण,

त-जहा.—सोय-परिनाणिहिं परिहायमाणिहिं, चक्खु-प० प०, घाण- प० प०, रस-प० प०, फास-प० प०, अभिकन्त च खल्ल वय संपेहाए.—तओ से एगया मूढ-भाव जणयन्ति; जेहिं वा सिंद्ध सवसह, ते व ण एगया नियमा पुन्ति परिवयन्ति सो वा ते 25 विसमे पच्छा परिवएजा।

नाल ते तव ताणाए

वा सरणा ए वा, तुमम्पि तेंसि नाल ताणाए वा सरणाए वा । (३) ' से न हस्साए, न किह्नाए,न रईए,न विमुसाए' इच्चेव समुद्धिए 'अहो विहाराए'। अन्तर च खळु इम संपेहाए

> धीरे मुहुतमि नो पमायए; वंशो मुद्देर जोव्वण च जीविए

इह जे पमता .--

से हन्ता छेता भेषा लुम्पिता विलुम्पिता उह्नवेता उत्तासहता ' अकडं करिस्सामि ' िष मन्नमाणे । जोहें वा ... (यथा ५, २५-२८ नवर परिवयन्ति तथा परिवयज्ञा स्थाने पोसेन्ति तथा परिवयज्ञा स्थाने पोसेन्ति तथा पोसेज्ञा भणनीयं ) ... सरणाए वा । (४) उन्नाईय-सेसन्तेण वा सिन्निहि-सिन्चओ कज्जाइ कृष्टिमिगिसिं माणवाण भोयणाए । तओ से एगया रोग-समुप्पाया समुप्पज्जन्ति; जेहि वा .... (यथा ५, २५-२८ नवर परिहरन्ति तथा परिहरेज्ञा पटनीय ) सरणाए वा ।

( ५) जाणितु दुक्ख परोय-साय

अणभिकत्तं च खलु वय संपेहाए

खण जाणाहि पण्डिए

10 जाव सोत्त-परिचाणेहिं अपरिहायमाणोहिं, नेत्त-प० अ०, घाण-प० अ०, रस-प० अ०, फास-प० अ०; इच्चेपिंह विरूब-रूबेहिं परिचाणोहिं अपरिहायमाणेहिं। आयद्व सम्म समणुवासे-ज्जासि—ति बेमि॥

₹–₹

(१) अरह आउट्टे से मेहाबी;

सणंसि मुक्के अणाणाए

15

20

पुड़ा वि एगे नियहन्ति मन्दा माहेण पाउडा. '' अपरिगाहा भविस्सामा '' समुद्वाए रुद्धे कामे'भिगाहर अणाणाए मुणिणो पडिलेहन्ति, एत्थ मोहे पुणो पुणो

सन्ना नो हव्वाए नो पाराए।

विमुत्ता हु ते जणा, जे जणा पार-गामिणो । लोभ अलोभेण दुगुञ्चमाणे

लड़े कामें नो'भिगाहर।

विणश्तु लोभ निक्खम्म

एस अकम्मे जाणइ पासइ, पडिलेहाए नावकस्वइ, एस

अणगारे ति पबुच्चह ।

25 (२) 'अही य राओ,...( यया '५, १९-२१), पुणी-पुणी'से आय-बले, से नाइ-बले, से मित्त-बले, से पेच्च-बले, से देव-बले, से राय-बले, से चोर-बले, से अइहि-बले, से किवण-बले, से मित्त-बले, से पेच्च-बले, से देव-बले, से राय-बले, से चोर-बले, से अइहि-बले, से किवण-बले, से समण-बले, (३) इच्चेण्र्रं विरूव-रूबीई कज़ीहें दण्ड-समायाण सफ्हाए भया कज़इ 'पाव-मोक्सो 'ति मलमाणे अदु वा आमसाए। स परिलाय मेहाकी\_ नेव सय एए्हिं कज़ीहें दण्ड समारम्भेज्जा, नेव'ल एण्डिं कज़ीई दण्ड समारम्भावेज्जा, नेव'ल उपएहिं दण्ड समारम्भत समणुजाणेजा। एस मग्गे आरिण्डिं पवेइए, जहेन्य कुसले नोवलिप्पे-जजासि—ति बेमि॥

₹-₹

(१) ते असइ उच्चा-गोए, असइ नीयह-गोए, नी हीणे, नी अहरिते नी पीइए! इति सखाए के गोया-वाई, के माणा-वाई, किस का एगे गिज्से १ (२) तम्हा

पण्डिए नो इरिसे, नो कुज्हो

मूएहिं जाण पडिलेह साय समिए एयाणुपस्सी,

त-जहा : अन्धत बहिरत मृथतं काणत कुण्टत खुज्जत वडभत सामत सबलत, सह पमाएणं अणेग-रूवाओ जोणीओ सधेइ,विरूव-रूदे फासे पडिसवेएइ।(३)से अबुज्झनाणे हओवहए ठ जाई-मरण अणुपरियद्दमाणे।

जीविय पुढो थिय इह मेगेसि माणवाण खेत-वत्यु मनायमाणाण; आरतं विरत्त माण-कुण्डलं सह हिरण्णेण, इत्थियाओ परिभिज्झ तत्थेव रत्ता, न एत्य तवो वा दमो वा नियमो वा दिस्सह;

सपुण्ण बाले जीविज-कामे छालप्पमाणे

10

मूढे विष्परियासु'वेह ।

( ४ ) रूपेमव नावकखन्ति जे जणा धुव-चारिणोः, जाई-मरण परिचाय चरे नकमणे दढे। निथ्य कालस्त्रणागमी—सञ्चे पाणा पिया'ज्या

सुइ-साया दुक्ख-पडिकूला

15

अप्पिय-वहा पिय-जीविणो जीविज-कामा । सब्बेासं जीविय पिय,

( ५ ) त परिगिज्ञ दुपय चउप्पय

अभिजुजियाण ससचियाण

तिविहेण — जा वि से तन्थ मत्ता भवड अप्पा वा बहुगा ना, से तन्थ गढिए चिट्टइ भोयणाए । तजो मे एगया विपरिसिद्ध सभूय महोवगरण भवड, त पि से एगया दायादा विभ-20 यन्ति, अदत्तहारो वा से अवहरह, रायाणो वा से विद्यम्पन्ति; नस्सइ वा से, विनस्सइ वा से, नगार-दाहेण वा से डज्झह । इति से परस्सद्वाए

> कूराई कम्माइ बाले पकुब्वमाणे तेण दुक्खेण मूदे विप्परियासु'वेश ।

मुणिणा हु एय पवेश्य

25

अणोइन्तरा एए, नो य ओह तरितए;

अतीरगमा एए, नो य तीर गमित्रए ; अपारगमा एए, नो य पारं गमित्रए ! आयाणिज च आयाय तिम ठाणे न चिद्रह.

वितह पप्प'लेयने तिमा ठाण'मा चिहुइ ।

उद्देसो पासगस्स नित्थः; बाले पुण निहे काम-समणुने असमिय-दुक्खे दुक्खी 30 दुक्खाणमेव आवट्टमणुपरियट्टर—ति बेमि॥

3-8

(१) तओ से एगया,...( गणा ५, १५-१८ नगर परिहरन्ति तथा परिहरेज्जा स्काने

30

परिश्वयन्ति तथा परिश्वप्रकता भणनीय )... सरणाए वा ।

(२) जाणितु दुक्ख पत्तये-साय

भोगामेन अणुसोयन्ति—इह मेगोसं माणवाण—तिविहेण....(यथा७,१९-२१ नवर अवहरइ स्वाने हरह भणनीय)....विष्परियाम्रनेह':---

(३) आस च छन्द च विभिन्न धीरे, तुम चेव, त सह्य आहट्टु, जेण सिया, तेण नो सिया। इणमेव नावबुज्झन्ति जे जणा मोइ-पाउडा।

थीभि लोए पव्वहिए; ते भी वयन्तिः " एयाइ आययणाइ " । से दुक्खाए मोहाए माराए नरगाए नरम-तिरिक्खाए ! सयय मुढे धम्म नाभिजाणह ।

10 डयाहु वीरे. अप्पमाओ महा-मोहे !

( ४ ) अन्न कुसलस्त पमाएणं सन्ति-मरण संपेहाए, भेजर-धम्म संपेहाए ! " नाल पाम "—अन्न तव एएडिं!

> एय पास, मुणी, महब्भय, नाइबाएज्ज कवण । एस बीरे पसिसए, जे न निव्विज्ञह आयाणाए 'न मे देह 'न कुप्येज्ञा, थोव रुध्दु न खिंसए,

पडिसेहिओ परिणमेजा ।

एथं मोण समणुवासेज्जावि- ति वेमि ॥

3-4

(१) जिमण विकास स्वेहि सन्येहि लोगस्स कम्म-समारम्भा कज्जनित, त-जहाः अन्यामो से पुताण धूयाण युग्हाण नाईण धाईण राईण दासाण दासीण कम्म-कराण कम्म-20 करीण आएसाए, पुढो पहेणाए, सा'मासार पायरासाए सन्निहि-सन्निचओ कज्जह (२) हह मेगेसि माणवाणं भोयणाए

> समुद्विए अणगारे आरिए आरिय-पन्ने आरिय-दसी ' अय सधी ' ति अद्दक्तु ने नाइए नाइयावए न समणुजाणाइ। सन्नामगन्त्रे परित्राय निरामगन्धे परिन्तर ।

25 (३) अदिस्समाणे कय-विकण्सु

से न किणे, न किणावए, किणन्त न समणुजाणए। से भिक्ख् कालको बलने मायको स्रोयको स्राणयको विणयको स-समयको पर-समयको भावको,

> परिगाह, अमनायमाणे, काले'णुद्दाई अपडिले, दुइओ

छिचा निया ।

वन्य पडिगाह, इम्बळं पाय-पुञ्छणं सोगाह च कडासणः

```
एएसु चेव जाणेउजा
कद्धे भाहारे भणगारी माय जाणेउजा
```

से जहे'य भगवया पर्वेदय

'लाभो 'ति न मञ्जेज्जा, अलाभो 'ति न सोयए,

बहु पि लध्दु न निहे।

5

परिमाहाओ अप्पाण अवसके ज्ञा, अलहा ण पास परिहरेज्जा । एस मग्ने आरिएाई पैवेहए, जहें त्य कुसले नोबलिप्पेज्जामि-ति वेमि ।

( ४ ) कामा दुरहकमा, जीविय दुप्पडिवूहण,

काम-कामी खलु अय पुरिसे, से सोयइ जूरइ तिप्पइ पिट्टइ परितप्पइ ।

आयय-चक्खू लेग-विपम्मी

10

होगस्स अहे-आग जाणह. उट्ट नान जाणह, तिरिय नाग जाणह गढिए अणुप-रियट्टमाणे;

मधि विहता हह मन्चिप्हिं

' एस बारे पमसिए, जे बढ़े पडिनायए ।

(५) जहा अन्तो नहा प्रगर्द, जहा बाहि नहा अन्तो। अन्तो-प्रन्तो पूर-देह-16 हाराणि पासर पुढो विसवन्तार पण्डिण पडिलेहाण्,

मे महम पश्चिताण् ।

माय तुलाल पन्चासी,

मा तेसु तिरिच्छ अप्याण जावाया । कामकमे'य सन्तु पुरिसे, बर्-नाई, कटेण म्दे । पूर्णो त करेह लोभ;

वर बड़ेहि अप्पणी ।

जिमण परिकहि जाड, हमस्म चेव पर्टिवृहणयाण

अमरायह महा-सङ्गी,

अहमेय तु पेहाए ज्यरिकाएं कन्दह,

" से त जाणह, जमह बोमि ' "

2

(६) तेहच्छ पण्डिए पवयमाणे । से हन्ता हैता भेता लुम्पिता विलुम्पिता चह्रव-ता 'अकड करिस्सामि 'ति मन्नमाणे ।

जस्म वियण करेइ,

अल बालस्म मगेण,

जे वा से कारेह, बाले।

30

न एव अणगारस्म जायइ--- ति बेमि ॥

२–६

(१) से त सबुज्झमाणे आयाणिय, समुद्राए-तम्हा पाव कम्म

ने'व कुरुजा न कारवे।

10

15

30

```
सिया तत्थे'गयर विपरामुसइ,
```

छस् अन्नयरम्मि कप्पर ।

सहद्वी लालप्पमाणे

सएण दुक्खेण मुढे विध्यरियास्'वेह ।

सएण वि प्पमाएण पुढो वय पकुन्वइ,

जासि'मे पाणा पन्विह्या । पडिलेहाए " नो निकरणाए "

एम परिन्ना पव्चचार, कम्मोवसन्ती ।

जे ममाइय-मइ जहाइ, से जहाइ ममाइय; से ह दिइ-भए मुणी, जम्म निथ ममाइय ।

त परित्राय मेडावी

विश्ता लाग, बन्ता लोग-सन्न

से मइम परक्रमेज्जामि--ति बेमि ।

( ३ ) नारह सहए कीरे, वीरे नी सहए रह: जम्हा अविमणे वीरे, तम्हा वीरे न रज्जई। सहे य फाने महियासमाणे

निव्विन्द नन्दि इह जीवियम्म । मुणी मोण समायाय ध्रेश कम्म-सर्रारग.

पन्त लुह सेवन्ति बीरा सम्मत्त दिभणो ।

एस ओहतरे मुणी तिण्णे मुत्ते विरण वियातिण--ति बेमि ।

( ४ ) दुव्वयु-मुणी अणाणाण नुस्छण मिलाइ वर्रण 'एस बीरे पसित्त', 'अचेर लोग-मजोग, एम नाग पवुरुचः', ज दुक्ख पवेरय 'इह माणवाण' तस्त 'दुक्खम्म कुमना पारित्र उदाहरन्ति ' ( ५ ) ' इति कम्म परित्राय मन्वमो '। जे भगन-दमी से अणनारामे, जे अणनारामे से अणन-दमी

जहा पुण्णम्म कत्थई, नहा तुच्छम्म काथई।

जहा तुच्छम्म कथई, तहा पुण्णस्म कथई। अवि य हणे अणाइय माणे 25 ए श्वामि जाण मेय नि निध

" के'य पुरिने क च नग १ । " ' एस बंदि पमिनग, जे बहु पटिमोयए "

चड्ढू अह तिरिव दिमासु, मे सन्वश्रा मञ्च-परिन्न-चार्रा

न लिप्पई छण-पण्ण वीरे।

से मेहाबी, जे अणुम्बायणस्य खेयके, जे य बन्य-पमोक्खमलेसी कुनले पुण नो बद्वे

नो मुक्के से उज च आरमे ज च नारमे !

( ५ ) अणारद्व च नारमे.

छण-छणं परिकाय लोग सन्न च सन्वसो । उद्देसो पासगस्स ..( यथा ७,३० ) ... आवष्ट अणुपरियट्टइ--ति बेमि ॥

#### सी ओ स णि जं

3-- 8

(१) सुत्ता अमुणी, मुणिणो सयय जागरन्ति; लोगिम जाण अहियाय दुक्ख ।

समय लोगस्म जाणिचा

5

एत्य सत्थोवरण । जिस्मि'मे सदा य हवा य गन्या य रसा य फासा य अभिसमन्नागया भवन्ति, ( र ) से आयव नाणव वेयव धम्मव बम्भव, पत्राणेहिं परिजाणक लोग ।

मुणी ति बच्चे, धम्मविउ ति अङ्ग,

आवट्ट-मोए सगमिण'भिजाणः ।

सीओ सिण-चाई मे नियान्ये अरइ-रइ-सहे फरुसिय नो वेएइ।

10

जागर वेरावरण वीरे एव दुक्ला पमोक्खिस । (३) जरा-मच्यु-वमोवणीए नरे.

सयय मुढे धग्म नाभिजाणः।

पासिय आउरे पाणे अवसत्तो परिव्वए ।

मन्ता एय अहिय ति पास

15

' आरम्भज दुभवमिण ति नच्चा

माई पमाई पनरेड गब्स ।

उवेहमाणो मह-स्वेत्रु उठनू

माराभिमाकं मरणा पमुच्चह ।

अप्यमतो कामाहि, उबरओ पाव-फम्मेहि, बीरे आय-गुत्ते, जे लेयले । (४) जे 20 पजावजाय-सन्धम्म खेयले; मे अमध्मस खेयले; जे असाधस्स खेयले, मे पजावजाय-सन्धम्म लेयले ।

अकम्मस्स वयहारी न विज्जा

कम्मुणा उवाही जायह।

कम्म च पडिलेहाए कम्म मूल च ज छण पडिलेहिय, सन्व समायाय/5 दोहि अतिहि अदिस्समाणे

त परिचाय मेहावी

विइत्ता लोग, वन्ता लोग-सन्न

से महम परकामेजजासि -- ति नेमि॥

#### ₹-₹

जाइ च बुर्ष्ट्घंच इह'उज पाम,
भूपाई साय पटिलेइ जाणे;
तम्हा'इविज्जो 'परम ' ति नच्चा
सम्मत-दमीं न करेइ पाव ॥

5

उम्मुख पास इह मिल्लिगिहः
 आरम्भ-जीवी उभयाणुपस्मी
कामेमु गिद्धा निचय करेन्ति,
 सिल्लिमाणा पुनरेन्ति गळ्म ॥

10

अबि से हासमामज्ज 'हन्ता नन्दी 'ति मलह।
 अल बालम्म संगण, वेर बहुड अप्पणी।

४. तम्हा दिविज्ज 'पग्म' ति नेच्चा आयक-दमी न करेड् पाव;

अगा च मूल च विशिष्ठ धीरे पलिच्छित्दियं ण निकम्म-दमी ॥

15

(१) एस मरणा पसुन्चह, से ह दिइ-मा मुणी; लोगिन परम-दर्मा

विवित्त-जीवी उवमन्ते मिमिण मिलिए समा जण प्राप्तकर्मा परिच्या ।

बहुच खलुपाव कम्म पगट।

20

मदच्छि। जिह बादहा।

एरथोबरए मेहाबी साम्य पान कमा हाम्या । (२) अणेगा-चित्ते स्वानु अय पुरिसे से केयण अरिहद पुरहत्तण, से अन्न-वहाण अन्न-परियादाण अन्न-परियादाण, जणवय-वहाए जणवय-परियादाण जणवय-परियादाण।

(३) आसेविता एयमह टच्चेवे गे ममुद्धिया, तम्हा त विषय ने सेवण निम्मार पासिय नाणी।

उववाय चवण नच्चा अणल चर माहणे। मे न छणे न छणावण छणन्त नाण्नाणण।

निज्निन्द नान्द अस्य प्यास्य अणोमदमी

**अणामद**मा

#### 30 निसण्णो पावेदि कम्मोर्छ ।

कोहाइमाण हणिया य वारे,
 लोभस्स पासे निरय महन्त;
 तम्डा हि वारे विरक्षो वहाओ

िलन्देज्ज सोय लहुम्य-गामी । ६. गन्थ परिन्नाय इह'ज्ज विरे मोय परिन्नाय चरेज्ज दन्ते; उम्मुगॉ लघ्दु इह माणवेदि नो पाणिण पाणे समारभेज्जासि—ित्त बेमि ॥	~
	5
₹३	
(१) सिंद्ध कोगस्स जाणिता	
आयओ बहिया पास, तम्हा न हन्ता न वि घायए।	
जमिण अन्नमन्न-विशीगञ्छाण्	
पढिलेहाए न करेड पाय कम्म,	
कि तत्य, मुणी, कारण सिमा ?	10
<ol> <li>समय तत्थु'वेहाए अप्याण विष्यसायणः</li> </ol>	
अणन्न-परम-न्नाणी नो पमाए कयाइ वि ॥	
आय-गुत्ते सया धीरे जाया-मायाएँ जावण,	
(२) विराग रूवेसु गच्छेज्ञा महथा खुडुणिह वा।	
आगइ गड पश्चित्य	15
द्योहि वि अन्तेहि अदिम्ममाणे	
मेन छिज्जहन भिज्जहन डज्जाह,	
न तम्बद (३) कचण मञ्त्र लोग ।	
अवरेण पुत्रव न सर्ित एमे	
कि तस्म 'ईय कि वा'गिभिस्म,	20
भासति एगे इत माणवा उ	
जमस्म र्दय तना गिमिन्स।	
नाईयमञ्जन य आगमिस्म	
अद्व <b>निय</b> च्छत्ति तहागय। उ <sub>१</sub>	
विध्य कप्पे एयाणुपम्मि	25
निज्हो।सहता खवण महेसी।	
२. का अरह के या जन्दे १ एश पि अमहे चरे;	
सन्व हास परिच्चज्ज अर्द्धाण-गुत्ता परिन्वए ।	
( ४ ) पुरिसा ! तुममेव तुम-मित्त, किं बहिया मित्तमिच्छसी ?	
ज जाणेजा उच्चालस्य, त जाणेजा दूरालस्य; ज जाणेज्जा दूरालस्यं; त	जाणे <b>ड</b> ना३०
उच्चालह्य	
परिसा । अताणमेव अभिनिभिज्झ, एव दक्खा पमोक्सिस ।	

पुरिसा! सञ्चमेव समनिजाण'हि ! सच्चस्स आणाए उवटिए मेहावी मार तरह । सहिए धम्ममायाय सेय समणुपस्सह ।

दुहओं जीवियस्स परिवन्दण-माणण-पूयणाण, जसि एगे पमायन्ति; सहिए दुक्खमत्ताए पुट्टो; नो झज्झाए ।

पासिम दविए लोग लोगालोग-पवज्ञाओ पमुचड - तिबेमि ॥

#### **₹**-8

(१) से बन्ता कोह च माण च माय च लोग च एय पासगम्स दसण, जबरय-सत्थस्स पिलयन्त-करस्स आयाण सगडिका । जे एग जाणद, में मन्व जाणह, जे सन्व जाणह, से एग जाणह । सन्वओ पमत्तस्स भय, सन्वओ अध्यमत्तस्स नियंगय। २ जे 'एग 'नामे, से 'बहु 'नामे; जे 'बहु 'नामे, से 'एग 'नाषे।

10 दुक्त लोगस्स जाणिता बन्ता लोगस्म सजोग

जन्ति बीरा महा-जाण, परेण पर जन्ति, नावक्रवन्ति जीविय । (३) एम विभिन्नमाणे पुटो विभिन्नद, पुढो विभिन्नभाणे एम विभिन्नह ।

सही आणाएँ मेहावी, लोग च आणाण अभिममेचा अकुओभय। अन्थि साथ परेण पर, निथि असाथ परेण पर

15 अन्य सथ परण पर, नाथ असथ परण पर
(४) जे कोह-दमी से माण-दमी, जे माण-दमी से माय-दसी, लोम-द०
पेज-द० दोम-द० मोह-द० पञ्च द० नम द० नार द० नाय-द०
तिरिय-द० दुक्ख-दमी । से मेहाबी अनिनियन्त्रता कोह च माण च
साथ च लोम च पेउज च दोस च मोह च गञ्म च जम्म च पार च नर्थ च तिरिय
20 च दुक्ख च । एय (यना ६) अ याण निस्तित समादिन । निमाध उवाही
पामगस्म १ न बिज्जह, निध-- ति बेमि॥

#### म म्म सं

પ્ર— **ર** 

(१) मे बेमि जे य अध्या जे य पट्टपत्रा जे य आगिषम्मा अरहन्ता भग-न्वतो, सब्दे त एवमाइक्खन्ति एव अमिन्ति एव पत्रपत्ति एव परूचेन्ति.—मण्वे पाणा सब्दे भूया सब्दे जीवा सब्दे सत्ता न हन्त्रप्रा न अञ्जावयव्या न परिधेतव्याहूँन परियावेयव्वा 25 न उद्देयव्या । (२) एम धम्मे मुद्धे ितिए मामए समेच्च लोग खेयलेहि पवेदए, त जहा-चहिएसु वा अणुटिएसु वा, उदिहएसु व अणुविहिएसु वा, उदस्य-दण्डेसु वा अणुवस्य दण्डेसु वा, भोवहिएसु वा अणुविहिएसु वा, मजोग-रएसु वा अस्तोग-रएसु वा ।

तच चे'य तहा चे'य, अस्मि चे'य पवुच्वह । (३) त आह्तु न निहे, न निक्खिवे, जाणितु धम्म जहा-तहा । दिहाइ नव्वेय गच्छेज्जा, नो लोगस्मे'सण चरे। जस्स नित्य इमा नाई, अला तस्त्र कृत्रो सिया १

दिह सुध मथ विनाय, ज एव परिकहिज्जह। समेमाणा चलेमाणा 'पुणो-पुणो जाह पकप्पेन्ति', 'अहो य राओ जयमाणें धीरे,' सया आगय-पन्नाणे। पमते बहिया पाम. अप्पमते सया परक्षभेज्जासि—ति बेमि॥

**8**–₹

(१) जे आमवा त परिम्मवा, जे परिस्मवा ते आमवा । जे अणामवा ते अपरिम्मवा, जे अपरिस्सवा ते अणामवा । एए पण मबुःहामाणे छोग च आणाण अभिसमेच्चा पुढो पवेरय

आधार नाणी इह भाणवाण

ससार पाडिवकाण सबुउअमाणाण विसाण-पत्ताण

(२) अहा वि सन्ता अदु वा पमता '

10

5

अहा-मचिमिण ति बेपि ना णागमी मच्चु-मुहम्म अन्धि; इच्छा-पर्शाया वकानिकेया काल-गर्हाया निचण निविद्वा पृद्धा-पृद्धो जाड पकण्ययन्ति ।

15

(३) एमे वयन्ति अदु वा वि नाणी नाणी वयन्ति अदु वा वि एमे

आवन्ती केया वन्ती लोगिम समणा य माहणा य पुढो विवास वयन्ति.—" से दिह च णे, सुय च णे, मय च णे, विशास च णे,

उट्ट अहे या निरिय दिसास

20

सञ्बन्धो सुपिडिलेहिँय च णे मन्त्रे पाणा सन्त्रे भृया सन्त्रे जीवा सन्ते सत्ता इन्तन्त्रा अज्ञानेयन्त्रा परिघेतन्त्रा उद्दयेयन्ता,

एत्य पि जाणह नत्येत्थ दोसो "।

(४) अणारिय-वयणमेय। तथ्य जे ते आरिया, ते एव वयानी — "से दुद्दि च भे, दुम्सुय च भे, दुम्सय भे, दुन्विन्नाय च भे, 'उड्ढू दुप्पडिलेहिय च भे, 25 ज ण तुम्भे एवमाइक्खह एव मामह एप पत्रवेह एवं परूवेह सन्वे दोसों। अणारियवयण-मय। (५) वय पुण एवमाइक्खामो एव मासामो एव पत्रवेमो एव परूवेमो सन्वे पाणा ४ न हन्तन्वा न अञ्जावेयन्वा न परियावेयन्वा न परियेतन्वा न उद्वेयन्वा; 'एथ पि जाणह नत्थेन्थ दोसो।' आरिय-वयणमेय"। पुन्व निकाय समय पत्तेय-पत्तेय पुन्छि-स्सामो — "६ मो पावाउया। कि भे साय दुक्ख उयाह आसाय १" मिया-पडिवन्ने यावि ३० एवं बूया. — "सन्वेसि पाणाण ४ असाय अपरिणिन्वाण महन्मय दुक्ख " ति — ति वेमि॥

20

80

```
8-3
```

(१) जबेह एण बहिया य लोग

से सब्ब-लोगास जें केइ बिन्नू;

अणुबीइ पास निविखत-दण्डा

जे केइ सत्ता पछिय चयन्ति ।

**ह** नरा मुय'च्चा धम्मवित्र ति अञ्जू

' आरम्भज दुक्लमिण ' ति नच्चा

एवमाहु सम्मतदिसणों (२) ते सन्वे पावाश्या; दुक्सस्स कुसला परित्रसुदाहरन्तिः

' इति कम्म परिश्राय सन्वसो '। इह आणा-कसी पण्डिए अनिहे णगमप्पाण सॉपेहाए धुणे सरीरग,

कसेहि अध्याण, जरेहि अध्याण

जहा जुण्णाइ कट्ठाड हरववाही पमन्थड ।

एवमत्त-समाहिए अनिहे

विगिश्च कोह आविकम्यमाणे

15 इम निरुद्धा'उय सपेहाए,

दुक्त च जाण अदु वा गिमिन्त,

पुढी फासाइ च फासए

लोग च पास विष्कन्दमाण,

(३) जे निन्वुडा पावेहि कम्मेहिं अनियाणा ते वियाहिया । सम्हा हिवेडको नो पटिसजलेडकासि—ति बेसि॥

8-8

(9)

आवीरुए प्यारुण निष्पारुए

जहिता पुब्ब-सजीग

दिच्चा उदसमः

तम्हा अविमणे वीरे

25 सारए समिए सहिए सया जए-दुरणुचरो मन्गो वीराण अनियद्व-गामीण-विगिश्च मन-सोणिय ।

> ( २ ) एस पुरिसे दिवए वीरे आयाणिक्जे वियाहिए, जे धुणाइ समस्य

वसिता बम्भवेरसि ।

नेचेहिं पलिच्छन्नेहिं

आयाण-सोय-गढिए बाले अन्वोच्छित्र-बन्धणे अणभिक्रन्त-संजोए,

तमामि अविजाणओं आणाए लम्भो नित्थ ति बेमि.

(३) जस्स नित्य पुरा पच्छा, मज्झे तस्स कुओ सिया ?

से हु पन्नाणमन्ते बुद्धे आरभ्भोवरए;

सम्ममेय ति पामहा।

5

जेण बन्ध वह घोर परियाव च दारुणं पिलिच्छिन्दिय बाहिरग च सोय

निकम्म-इसी इह मचिचएहिं,

कम्मुणा स-फल दहु तओ निज्जाइ वेयवी।

(४) जे खलु भो चीरा सिभया सिहया सया जया सघड-दिसणो आओवरया 10 अहा-तह लोग जवेहमाणा,

पाईण पडीण दाहिण उदीण इति, सच्चिस परिविचिहिन्तु, साहिस्सामी नाण वीराण सिमयाणं सिहयाण सया जयाण सपट-दसीण आओवरयाण अहा- तहा छोग समुप्पेहमाणाण । किमिरिथ जवाही पासगस्स ? न विज्जह, नित्य-ति बेमि ॥

### लो ग सा रो

(आवन्ती)

4-8

(१) आवन्ती केयांवन्ती लोगमि विषयामुमन्ती अहाए अणहाए वा एए.सु चेव 15 विष्परामुमन्ती । गुरू से कामा, तओ ने मारस्य अन्तो, जशो से मारस्य अन्तो, तओ से हुरे । नेव से अन्तो, नेव से दूरे । से पामह क्रिमियमिव कुमगे पणुत्र निवहय वाणरिय

एव बालस्म जीविय मन्दम्म अविजाणजो । कुराइ कम्माइ बाले पक्वमाणे

तेण दुक्खेण मुढे विष्यस्यासमेड,

20

मोहेण गब्भ मरणाइ एइ,

' पत्थ मोहे पुणो-पुणो'। ससय परिजाणओं संसारे पारित्राण भवह; समय अपरि-जाणओं सतारे अपरित्राए भवह।

जे छेए, सागाारिय न सेवए,

कडु एवमवयाणओ बिइया मन्दस्स बालिया लद्धा हुरन्था।

25

पडिलेहाए आयमेता अणासेवणाए-ित बेमि।

(२) पासइ एगे

रूवेसु गिद्धे परिणिज्जमाणे,

' पत्थ फासे पुणी-पुणो '।

आवन्ती केया'वन्ती लोगासि आरम्भजीवी, एएमु चेव आरम्भजीवी

#### ए थ वि बाले परिपच्चमाणे

रमइ पावे। हैं कम्मेहिं

असरण ' सरण ' ति मन्नमाणे ।

इहमेगेसिं एग-चरिया भवर । (३) मे बहु-कोहे बहु-माणे बहु-माए बहु-लोभे, बहु-एए ठबहु-नारे बहु-सढे बहु-सकप्पे आसव-सक्षा पिलिओच्छन्ने; उद्विय-वाय पवयमाणे--- भा मे केर अदक्रत्यू '। अन्नाण-पमाय-दोमेण सथय मृढे धम्म नामिजाणह ।

अटा पया, माणव, कम्प कोविया,

जे अणुवरया अविज्जाए पिलमोक्खमाहु, आवट्टमेव अणुपरियट्टन्ति—ति बेमि ॥

4-2

(१) आवन्ती केया वन्ती लोगानि अणारम्भ-जीवी, एए.सु चेव अणारम्भजीवी । एत्थोवरण त होलमाणे

' अय मधी ' ति अहस्त्वू, जे ' हमस्स विगाहम्स अय खणे ' ति अनेसी ।

एस मागे आरिएहिं पवेदेए ।

(२) उद्दिए नो पमायए।

15

10

' जाणितु दुक्ख परोय-माय '; पुढो-छन्दा हह माणवा — पुढो दुक्ख पर्वेहयं।

मे अविहिममाणे अनवयमाणे

पुढ़ो फामे विषणोद्धण, एस ममिया-पश्याण वियणनिए ।

(३) जे असत्ता पांचार कम्मोह उपाइ "ते अप्यक्त कुमित " इति, उपाह 2) बीरे 'ते फासे पुट्टें हियामए'। से पुत्र्व पेय पच्छा वेय भेजर-यम्म विद्वमण-यम्म अध्व अनितिय असामय चयावच्य विपिश्णाम-यम्न पामतः। एवस्य सांच मनुवेहमाणस्म एगाय-यण-स्यस्म इह विष्पुक्तम्म निथ मनो विर्यम्म-—ति बेमि।

(४) आवन्ती कैया वन्ती कोगमि पिन्गिहावन्ती मे अप्प वा बहु वा अणु वा थल वा चित्तमन्त वा अचित वा, एएमु चेत्र पिन्गिहावन्ती, एयदेवेगेमिं मतक्वय अवह ।

लोग-विच च ण उवेहाए, एए मंगे अविजालको,

' से मुप्रिडिबुद्ध मूवणीय ' ति नच्चा

पुरिमा ! परम-चक्खू विष्यरङम एएमु चेव बम्भचेर ! ति बेमि;

(५) "से मुय च मे अज्ञत्थ च मे "

बन्ध-प्पमोक्ग्वो तुज्झ ज्झ थेव ।

एत्थ विरण् अणगारे दीह-राय निःक्खण्; पमते बहिया पास, अप्पमते परिव्हण् ।

एयं मोण सम्म अणुवासेज्जामि-- ति बाम ।

30

(१) आवन्ती केया'वन्ती लोगिंस अपरिमाहाबन्ती, एएमु चेव अपरिमाहाबन्ती। सोच्चा वह मेहावी पण्डियाण निसामिया

-समियाए धम्मे आरिएहिं प्रवेहए-''जहत्य मए सधी झोसिए, एव अन्नत्थ: संधी दज्झोसए भवइ। तम्हा बेमि"

नो निण्हवेज्ज वीरिय।

16

( २ ) जे पुन्बुहायी नो पच्छा-ानवाई, जे पुन्बुहाई पच्छा-निवाई, जे नो पुन्बुहाई नो पच्छा-निवाई

> से वि तारिमण् मिया, जे परिन्नाय लोगमन्नेसिए। एय नियाय मुणिणा पवेइय,

इह आणा कस्वी पण्डिए अनिहे प्रवावर-राय जयमाणे

मया मील मॉपेहाण सृणिया भवे अकामे अञ्चन्त्र । इमेण चेय जुङ्गाहि ' कि ते जुङ्गेण ब झओ ?

जुद्धारिह खलु दुन्द्रभ ।

जहे थ कुमलेहि परिका-विवेगे शासिए ।

चुण हूं बाले गठशाह रिज्जह,

(३) 'अम्मि च्यापञ्च चर्डा। रूबिस वा छणिन वा 'से हुएगे संविद्ध भए सुणी।' अलहा लोगमुबेहमाणे

' इति कम्म परिन्नाय मञ्बमो से न हिसड', सजमई, नो पगञ्जई ।

(8) खबेहमाणी पत्तेय माय वण्णाणसी नारभे कचण सब्द-लोग, एग-प्पमुहे विदिस-प्पडणो

10

निन्विण्ण-चारी अरण पयास् ।

मे वसुम मन्ब-ममन्नागय-पन्न णेण अध्याणेण अकरणिउज पाव कम्मन्त नो अने-सी । ज सम्म ति पामहा, त मीण ति पामहा; ज मीण ति पासहा त सम्म ति पासहा । न 25 इम सक सिटिलेहि आइ ज्ञमीणोहि गुणामाण्टि वक-समायारेहि पमतेहि गारमावसन्तेरि ।

> ( ५ ) मुणी मोण समायाण धुले कम्म-सर्गरग, पन्त लह च सेवन्ता वीरा सम्मत्त-दिमणी । एस ओहतरे मुणी निण्णे मुत्ते विरए वियाहिए-ित बेमि ॥

> > 4-8

(१) गामाणु-गामं दृइज्जमाणस्स

दुज्जाय दुष्परञ्चन्त भवइ आवियत्तस्म भिक्खुणो वयसा वि एगे बुइया कुप्पन्ति माणवा,

जन्तयमाणे य नरे महया मोहेण मुज्झह--

(२) सबाहा बहवे भुज्जो दुरहक्षमा अजाणओ अपासओ ।

एयं ते मा होड ! एय कुसलस्त दसण,

तिह्हीए तम्मुतीए तप्पुरकारे तस्ष्ठनी तिन्नवेमणे जय-विकारी वित्त-निवार्ड

गप-1पदारा १५०-१नपार पन्थ-निज्झाई बलि-बाहिरे

पासिय पाणे गच्छेज्जा।

(३) से अभिकाममाणे पडिकममाणे, मंकुचेमाणे पतारेमाणे

विनियद्वमाणे सपिलमञ्जमाणे।

10 एगबा गुण-समियस्स शियओ काय-मफास अणुचिण्णा एगइया पाणा उद्दायन्ति; इह लोग-वेयण-वेजजावटिय।

> ज आउट्टी-कथ कम्म, त पश्चिताय विवेगमेइ; एव से अप्पमाएण विवेग किट्टड वेथवी ।

(४) में पह्य-दमी पह्य-परित्राणे उवमन्ते महिए सया जए दुड विष्युडिवेण्ड अप्याण ' किमेन जणो करिस्सइ ?

15

25

एस में परमारामें, जाओ लोगम्मि इधिओं '। सुणिणा हुण्य पवेदय (५) डब्बाहिउजमाणे गाम-धम्मेहिं अविनिब्बलासए,

अवि आमोयिरिय कुउजा, अवि उहु ठाण ठाण्यज्ञा, अवि गामाणुगामं दृहरजेरजा, अवि नाहार बोच्छिन्देरजा, अवि चण्डाथीमु मण पुरुव दण्डा पच्छा पासा, पुरुव फामा पच्छा दण्डा—इच्चेए 20 कष्टहा संगकरा भवन्ति । पटिन्हाण आगमेता आणवेरजा अणामेवणाण—ति बेमि ।

से नो काहिए नो पामणिए नो सपमारए नो मामए नो कय-किरिए; 'वड-गुले अज्झप्प-सबुडे 'पश्विज्ञए सवा पाव । एय माण ममणुवामेज्ञासि--- ति वेमि ।

دا\_له

(१) में बाम त-जहा

भवि इरए पडिपुण्णे समामि भासे चिट्टइ,

उवसन्त-रण मार्वन्यमाणे मे चिट्टड मोयमञ्जा-गण।

में पान मध्वओ गुत्ते पान लोग महेनिणी,

जे य पन्नाणमन्ता पबुद्वा आरम्भोवरयः

ममम्मेय ति पामहा।

' कालस्म कखाग परिवयन्ति'— ति वैमि ।

30 (२) विभिन्छ-ममावज्ञेण अप्याणेण नो लभइ ममाहिं। 'सिया वे'ने अणुग-च्छिन्ति ?, असिया वे'ने अणुगच्छिन्ति ? 'अणुगच्छिमाणेहिं अणुगच्छमाणे कह न निविवज्जे ?

(३) तमेव सच्च नीमक, ज जिणेहिं पवेहय।

सहिम्म णं धमणुत्रम्स सपन्वयमाणम्स भ समिय ति मन्नमाणस्स एगया धिमया

होह, ' ' स० ' ति म० ए० ' असमिया ' हो०, ' ' असमियं ' ति० म० ए० समिया हो०, ' ' अ० ' ति म० ए० असमिया होह। " ' ममिय ' ति म० ' समिया वा असमिया बा ', समिया होइ उवेहाए, ' 'असमिय' ति म० 'स०वा अ० वा ' अममिया होइ उवेहाए। उवेहमाणं अणुवेहमाण बूया . " उवेहाहि ममियाए"। इच्चेवं तत्थ सधी झोसिए भवइ।

( ४ ) मे उद्दियस्त ठियस्न गइ समणुपस्तह,

एत्य वि बाल-भावे अप्पाण नो उबदमेज्जा।

तुम सि नाम त चेव ज ' हत्तव्वं ' नि मन्नसि !

तुम सि नाम त चेव ज 'अञ्जावेयव्व ' ति मन्नसि, . . . 'परियावेयव्व ' . . .

'परिघेत्तन्व'...' उद्देवयन्व'...' अञ्जु चेयपडिबुद्ध-जीवी।

तम्हा न हन्ता न वि घायए।

10

( ५ ) अणुसवेयण् अप्पाणेण ' ज हन्तव्व ' ति नाभिपत्थण् ।

जें आया मे विकाया, जे विन्नाया से आया . जेण विजाणह से आया । त पहुच्च पडिमलाए एम आया-वार्ह।

समियाण परियाण वियाहिए-ति बेमि॥

#### 4-8

(१) अणाणाए एमे नोबहाणा, आणाए एमे निरुवहाणा एव ते मा होउ ! 15 एव कुसलस्त दसण, 'तिहिहीए तम्मुनीए, तप्पुरकारे तम्सन्नी तिन्नेसणे।'

अभिभूय अद्देश्यू अणभिभूणः, पहु निरालम्बणयाण् जे मह अवही मणे । पवाएण पवाय जाणेण्या सह-मम्भुदयाएं पर वायरणेण अन्नोसं वा अन्तिए सीच्चा,

( ५) निद्देस नाइवत्तेज्जा मेहावी ।

मुपडिलेहिय सन्वओ सन्वयाए नम्ममेव समभिजाणिया ।

20

इहाराम परिन्नाय अर्छाण-गुत्तो परिव्वण, निट्टियही बीरे आगमेण सया परक्रमेडजासि—ति बेमि ।

(२) उहु सोया बहे सोया तिरिय सोया वियाहिया, एए मोया वियक्खाया जेहिं सग ति पासहा। आवह तु उवेहाए एक्य विरमेज्ज वेयत्री,

25

30

विणइन् सीय निकलम्म

ण्स महमकम्मा जाणह पासह, पिळिटाण् नावकखरः; (३) इह आगर गर परिनाय अच्चेर जार मरणस्स बहुमग विक्खाय-रणः;

सन्त्रे सरा नियष्टन्ति ।

तका जत्थ न विज्जइ, मई तत्थ न गाहिया।

आए अप्पइट्टाणस्स खंयत्रे (४) से न दीहे न हस्से न वहे न तसे न चउरसे न परिमण्डले, न किण्हे न नीले न लेकिंग हालिंद्दे न सुक्किले, न मुर्भिगथे न दुर्भिगथे, न तिरो न कडुए न कसाए न अबिले न महरे, न कक्खडे न मछए, न सुरूप न लहुए, न सीए न उण्हे,

न निद्धे न छुक्लो, न काऊ, न रुहे न संगे, न इत्थी न पुरिसे न अन्नहा । 'पिरेने सन्ने उनमा न विष्जद '। अरुवी सता, अपयस्स पथ नित्थ । से न सहे न रूवे न गन्धे न रसे न फासे इच्चे-बावन्ति-ति वेमि॥

(१) अवुज्झमाणे इह माणवेसु आघाइ से

5

नरे जिस्ति'माओ जाईओ सञ्बलो सुपडिलेहियाओ भवन्ति, अध्याह से धुयं णाणमणेकिसं । से किहर तेसि समुद्रियाण नि क्खन्त-दण्डाण

समादियाण पन्नाणमन्ताण इइ सुत्ति-मग्ग ।

एव पेगे महावीरा विपरक्रमन्ति,

10

पासह एगे अवसायमाणे अणत-पन्ने ।

(२) से बेमि से जहा वि कुम्मे हरण विनिविद्व-चित्ते

पच्छन-पलासे उम्मुमा से नो लभइ।

भज्ञगा दव मिलवित नो चयनित,

एव पेगे अणेग-रुवेहि कुलेहि जाया

15

रूवेहिं सता कनुण थणान्त.

नियाणओं ते न लमन्ति मोक्ख।

अइ पास तेहिं कुलेहिं आयताए जाया

٤. गण्डी अदु वा कोही रायसी, अवमारिय काणिय झिम्मिय चेव कुणिय खुजिजय तहा,

20

25

30

₹. उयरिं च पास मुत्ति च मुणियं च गिळासिणं वेवय पीट-सिप्प च मिलिवेइ मह मेहिण-

₹. सोलस एए रोगा अक्खाया अणुपुब्बसी। अह ण फुसन्ति आयका फाशा य अममञ्जमा ।

8.

मरण तेसि सॉपेहाए उववाय चवण च नच्चा परिपाग च सॉपेहाए त सुणेह जहा तहा ।

( ३ ) सन्ति पाणा अधा तमासि वियाहिया। लामेव सइमसइमइयच्च उच्चावए फासे पडिसवेएइ।

बुद्धेहैं'य पवेइय ।

( ४ ) सन्ति पाणा वासमा रसमा उदए उदय-बरा आगास-गामिणी---पाणा पाणे किलेसन्ति . पास लोए महब्भय।

बहु-दुक्खा हु जन्तवो : सत्ता कामीई माणवा ।

अबरेण वह गच्छन्ति सरीरेण पशगुरेण; अहे से बहु-दुक्खे इती बाले पकुन्वह; एए रोगे बह नचा आउरा पास्थावए।

" नाल पास "—अल तवे'एहिं!

एय पास, मुणी, महन्भय, नाइनाएउज कवण। अध्याण भी सुस्सस भी ! 5

भूय बायं पवेणस्सामि ।

(५) इह खलु अतताण तेहि-तेहि कुर्वेहि अभिसेण्ण अभिसम्या अभिसत्ताया अभिनिक्वटा अभिसलुडा अभिसलुद्धा अभिनिक्खन्ता अणुपुरुवेण महागुणी । त

परकमन्त परिदेवमाणा

10

" मा णे चथाहि " इति ते वयन्ति;

(६) छन्दोदणीया अज्झोववन्ना

अकन्द-कारी जणगा रुयन्ति।

अतारिसे मुणी ओहतरए, जणगा जेण विष्पजढा; सरण तत्थ नो समेद। किह नाम से तत्थ रमद? एय नाण सया समणुवासेज्जासि ति—नोमि॥

**E-3** 

(१) आउर लोग मायाए

चइता पुब्ब-सजीग

हिच्चा उवसम

विसत्ता बम्भचेरास

बसु बा अणुवसु वा

जाणिषु धम्म जहा-तहा

अहे'गे तमच्चाई

दुःसीला बत्थ पिडिग्गह कम्बलं पाय-पुञ्छण विओसिज्जा अणुपुन्वेण अणिह्यासेमाणा परिसहे दुरिह्यासए । कामे ममायमाणस्स इयाणि वा मुहुते वा अपिर-माणाए भेओ एव से अन्तराइएहि कामेहि आकेवलिएहिं; अविहण्णा चे'ए ।

(२) अहे'ने धम्ममायाए-

आयाण-पभिद्य-सुप्पणिहिए चरे अपलीयमाणे दढे;

सन्व गेहिं परिचाय एस पणए महा-मुणी,

अर्यच्च सन्वओ सग

'न मह अस्थी रिति । इति 'एगो अहमसि ' जयमाणे

एत्थ विरए अणगारे सञ्बक्षो मुण्डे रीयए।

जे अचे परिवृत्तिए सचिनसइ ओमोयरियाए, से

20

अक्कुडे व हिए व व्हिसए वा पलिय-प्पान्थे अदु वा पगन्थे अतहेहिं सह-फासेहि । इति सखाए एगयरे अन्नयरे अभिन्नाय तिइक्खमाणे परिव्वए ।

ठ जे य हिरी । जे उ अहिरीमाणे

वेच्चा सन्व विसोत्तिय सफासे फासे समिय-दसणे।
(३) एए भी निगणा वुत्ता, जे लोगिस अणागमण-धन्मिणो
आणाए मामगं धम्म, एम उत्तर-वाए इह माणवाण वियाहिए।

एत्थोवरए त झोसमाणे

आयाणिज्जं परिचाय परियाएण विभिन्न । रहमेगेसि एग-चरिया होइ । तन्धि'यरा-इयरेहि कुलेहिं सुद्वे'सणाए सन्बे'सणाए से भेहावी परिन्वए;

सुब्भि वा अदु वा दुब्भि अदु वा तत्थ भेरवाः 'पाणा पाणे किलेसिन्तः'। ते कासे 'पुट्टो वीरे'हियासएउज्ञासि'—ित वेमि ॥

#### 4-3

15 (१) एय खु, मुणी, आयाण।

'सया सुअक्साय-धम्मे, ' विध्य-कप्पे निज्होमहत्ता '। जे अचेले परिवृत्तिए, तस्त णं भिक्तुस्स नो एव भवइ. 'परिजुण्णे मे वन्धे; वन्य जादस्मामि, सुत्त जाइस्मामि, सृ जाइस्सामि, स्मिस्तामि, सिव्विस्सामि, उक्किम्मामि, वुक्किम्मामि, परिहिस्सामि, पाडणिस्तामि '। (२) अदु वा तन्थ परकमन्त मुज्जो अचेल तण-फासा फुसन्ति, सीय-फा० 20फु०, तेओ-फा० फु०, दंतमसग-फा० फु०—एगयरे अनयरे विक्त्व-क्वे फासे अहियासेह अचेले लाधवमागममीणे तने से अभिसमन्नागए भवइ जहे 'य भगवया पवेइय, तमेव अभिसमेच्चा सन्त्रों सल्वयाए समत्त्रोव समिभिजाणिया।

एव तेति महा-वीराण चिर-राय पुत्रवाइ वालाइ रीय-माणाण दिवयाण पाल्'हियासिय;

25 आगय-पत्राणाणं किसा बाहा भवन्ति पयणुए य मस-सोणिए। विस्सेणी-कडु परित्राय एस तिण्णे मुते विरए वियाहिए.—ित वेमि। (३) विरयं भिक्खु रीयन्त चिर-राओसिय अरई तत्थ कि विधारए ? सधेमाणे समुद्विए:

जहा मे दीवे असदीणे एव से घम्ने आरिय-देसिए।

30 ते अणवकस्त्रमाणा अणहवाएमाणा दहया मेहाविणो पण्डिया । एवं तेसि भगवश्रो अणु-हाणे । जहा से दिया-पोए, एव ते

सिस्ता दिया य राजी य अणुपुरुवेण बाइय-- शि बेमि ॥

E-8

(१) एवं ते 'सिस्सा दिया य राओ य अणुपुन्वेण वाइया ' तेहिं महावीरेहिं पत्रा-णमन्तेहिं, तेस'न्तिए पत्राण उवलब्ध हिच्चा उवसम फारुसिव समाइयन्ति, 'विसत्ता नम्भ-चेरिस ' आण ' तं नो ' ति मत्रमाणा आघाय तु सोच्चा निसम्म 'समणुक्ता जीविस्सामो ' एगे निक्सम्म ते

> असभवन्ता विडज्झमाणा कामेडि गिद्धा अज्झाववन्ना समाहिमाधायमझोसयन्ता

सत्थारमेव फरुस वयन्ति ।

सीलमन्ता उवसन्ता सखाएँ रीयमाणा

' असीला ' अणुवयमाणस्स विदया मन्दस्स बालिया ।

नियट्टमाणा वे'गे आयार-गोयरमाइक्खन्तिः

नाण-क्ष्मद्वा दसण-कृतिणो नममाणा एने जीविय विष्परिणामेन्ति; पद्वा वे'गे नियहन्ति जीवियस्तेव कारणा।

निक्लन्त पि तेर्सि दुव्णिक्लन्त भवर । (२) 'बाला-'वयण्णिज्जा हु ते नराः; पुणो-पुणो जार पगप्पेन्ति '।

अहे समवन्ता विदायमाणा

"अहमसीति" विउक्कसे, उदासीणे 'फरुस वयन्ति' पिल्लयप्पगन्थे अतु बा पगन्थे भता बा पगन्थे भता बा पगन्थे भता बा पाग्ये भता बा पाग्ये भता बा पाग्ये भता बा पाग्ये भाषा का पाणे अल्लाही अलुवयमाणे का पाणे ! " बायमीणे बणओ यावि समणुजाणमीणे

" घोरे धम्मे उदारिए ! "

20

10

उवेहर ण अणाणाए, एस विसण्णे वितण्डे वियाहिए-ति बेमि।

(३) 'किमणेण भी जणेण करिस्सामि ?' ति मन्नमाणा एवं पे'गे विदत्ता।

मायर पियर हेच्चा नायओ य परिगाह

बीरायमाणे समुद्वाए

25

अविहिंसे सुन्वए दन्ते पाम दीणे उप्पह्ए पहिनयमाणे । वसट्टा कायरा जणा लसगा भवान्ति ।

अहमेंगेसिं सिलोए पावए भवह: "से समण-विक्रमन्ते, से समण-विक्रमन्ते!"
को'ने समनागएहिं असमनागए, नममाणेहिं अनममाणे, विरएहिं अविरए,
विष्टिं अदिविए। अभिसमेच्चा पण्डिए भेहाबी

निद्धियहे बीरे आगमेण सया परक्रमेज्जासि-चि बेमि ॥

8-4

(१) से गिहेसु वा गिइन्तरेसु वा गामेसु वा गामन्तरेसु वा नगरेसु वा नगरन्तरेसु

वा जणवएसु वा जणवयन्तरेसु वा सन्ते'गइया 'जणा लूसगा भवन्ति, ' अदु वा कासा फुसन्ति ते फासे 'पुट्टो वीरो'हियासए '।

(२) अोए समिय-दसणे

दय लोगस्त जाणिता

5 पाईण पडीण दाहिण उदीण

आइक्से विभए किहे वेयवी;

से डिह्एस वा अणुट्टिएस वा सुस्तुसमाणेस पवेषए (३) सर्नित विरह उवसमं निन्वाणं सोय अञ्जिविय मह्विय लाघविय अणह-विषयः, सन्वेसि पाणाण सेन्वेसि भूयाण सन्वेसि जीवाणं सन्वेसि सत्ताण अणुवीह भिक्खु अम्ममाहक्षेत्रजा । (४) अणुवीह भिक्खु-अम्ममा हक्स-10माणे नो अत्ताण आसाएजा नो पर आसाएजा, नो अलाह पाणाह भूयाह जीवाह सत्ताहं आसाएजा से अणासायण अणासायमीणे।

वज्समाणाण पाणाण

भूयाण जीवाण सत्ताण ' जहां से दीवे असदीणे ' एव

से भवइ सरण महा-मुणी ।

15 (५) एव से उट्टिए ठियप्पा

अनिहे अचले चले अबहि-लेसे परिवर् ।

सखाय पेसल धम्म दिद्विम परिणिन्वुडे ।

तम्हा सग ति पासहा ।

गन्थेहिं गढिया नरा, विसण्णा काम-विप्पिया।

20 तम्हा लहाओं नो परिविचसेज्जा, जस्ति'मे आरम्भा सन्वन्धो सन्ध्याए सुपरिकाया भवन्ति, जोसि'मे लक्षिणो नो परिविचसन्ति।से वन्ता कोह च माण च माय ध स्रोभ च

एस तिउट्टे वियाहिए- ि बोम ।

(६) कायस्स विओवाए एस सगाम-सीसे वियाहिए।

से इ पारगमे मुणी।

अविहम्ममाणे फलगावयदी

काळोबणीए कखेज्ज काल जाव मरीर-भेजो-शि बेमि ॥

' महापरिन्ना ' नाम सप्तममध्ययनं विनष्टामिति प्राचीनः प्रवादः श्रृयते ।

### वि मो हो

#### 4-8

- (१) से बेरिं: समणुक्तस्त वा असमणुक्तस्त वा असणं वा पाणं वा स्वाहमं वा साहमं वा बाधं वा पहिमाह वा कम्बल वा पाय-पुञ्छण वा नो पाएण्जा नो निमन्तेण्जा, नो कुण्जा वैवाबहिय परं खाढायमीणे-ति नेमि।
- (२) धुन चेय जाणेज्जा असण ना जान पाय-पुञ्छण ना लिम नो लिमिस, भुडिजय नो मुब्जिय-पन्थ नियत्ण निजकम्म निभत्त धम्म श्रोसेमाणे समेपाणे पाएज्जा निम-ठ न्तेज्जा, कुञ्जा नेयाविष्य पर अणादायमीणे—ित्त नेमि।
- ( १ ) इहमेगेसिं आयार-गोयरे नो सुनिसन्ते अवह । ते इह आरम्पट्टी, अणुवयमाणा . " इल पाणे ! " भायमीणा हलओ याबि समणुजाणमीणा, अदु वा अदिश्रमाहयन्ति अदु वा बायाओ विच्ञ्जन्ति, त-जहा —अत्यि लोण, नित्य लोण, धुवे लोण, अधुवे लोण, साहण् लोण, अणगहण् लोण, स-पज्जवसिण् लोण, अपज्जवसिण् लोण, ' सुकढे ' ति वा ' दुक्कढे '10 ति वा, ' कल्लाणे ' ति वा ' पावण् ' ति वा, ' साहु ' ति वा ' असाहु ' ति वा, ' सिद्धि ' ति वा ' असिद्धि ' ति वा, ' निरण् ' ति वा ' अनिरण् ' ति वा । जिमणं विप्यदिवन्ना मामग धम्म पन्नवेमाणाः एत्य वि जाणेह ' अकस्मात् '। एव तेसिं नो सुय-स्वाण् नो सुपन्नते धम्मे भवइ—से जहे'य भगवया पवेहय आसु-पन्नेण जाणया पासया—अदु वा पुत्ती वओ-गोयरस्स—ति वेमि ।

( ४ ) सञ्बन्ध सम्मय पाव; तमेव उवाइकम्म एस मह विवेगे वियाहिए । गामे वा अदु वा रण्णे

नेव गामे नेव रण्णे

धम्ममायाणह प्रवेहय माहणेण मईमया जामा निण्णि उदाहिया, जेमु हमे आरिया सम्बुज्झमाणा समुद्रिया। 20 जे निञ्बुडा पावेहिं कम्मोहें अनियाणा ते वियाहिया। उड्ड अह तिरिय दिसामु

सन्वको सन्वाबन्ती च ण पिडक जीवेहिं कम्म समारम्भेण—त परिचाय मेहावी नेव सय रएहिं काएहिं दण्ड समारमेजा, नेव'ने।हें एएहिं काएहिं दण्ड समारम्भावेजा, ने'वने एएहिं काएहिं एण्ड समारम्भावेजा, ने'वने एएहिं काएहिं एण्ड समारम्भावे वि समणुजाणेजा। जे व'ने एण्डिं काएहिं दण्ड समारमन्ते वि समणुजाणेजा। जे व'ने एण्डिं काएहिं दण्ड समारमन्ते, तेर्सि पि वय 25 क्यामो। त परिचाय मेहावी त वा दण्ड अन्न वा दण्ड—

नो दण्ड-भी दण्ड समारभेज्जासि--ति बीम ॥

#### **८-**२

<sup>(</sup>१) से भिक्खू परकामेज्ज वा चिट्ठेज्ज वा नि।सिएज्ज वा तुयटेज्ज वा सुसाणांसि वा सुनागारिस वा गिरि-गुहिस वा रुक्ल-मूलासे वा कुम्भाराययणासे वा हुरत्था वा । काहींचे विह-

रमाण त भिक्खु उबसकिमितु गाहावई बूया.—" आउसन्तो समणा! अह खलु तव अहाए असण वा ४ वस्त्रं वा ४ पाणाइ ४ समार्क्भ समुद्दिस्त कीय पामिश्च अच्छेज्वं अनिसर्ह अमिहड आहर्द् चेएिम, आवसह वा समुस्सिणामि, से मुञ्जह वसह, (२) आउसन्तो समणा!" भिक्खू तं गाहावद समणस सवयस पिट्याइक्ले —" आउसन्तो गाहावद! नो खलु ते वयणं ठिं आढामि, नो खलु ते वयणं परिजाणामि, जो तुम मम अहाए असण वा ४ वस्त्र वा ४ पाणाइ ४ समार्क्भ... आहर्द् चेएिस, आवसह वा समुस्सिणामि। से विरस्नो, आउसो, गाहावदं एयससाकरणयाए "।

(३) से भिन्स्तू परक्षभेज्ज वा जाब हुरत्या वा . गाहावई आयगयाए बेहाए असण... आहडु चेएइ, आवसइ वा समुस्सिणाइ, भिन्स्तु त परिवासेउ। तं च भिन्स्तू जाणेज्जा 10 सह-सम्मुइयाए परवागरणेण अलेकि वा अन्तिए सोखा 'अय खलु गाहावई मम अहाए असण.. समुस्सिणाइ'। त च भिन्स्त् पिडेलेहाए आगमेता आणवेज्जा अणासेवणाए—ित्र बोमी।

( ४) भिक्खु च खलु पुट्टा वा अपुट्टा वा—जे इने आइन्द्र गन्था फुसान्तः "से इन्ता, हणह खणह छिन्दह दहह पयह आलुम्पह विलम्पट सहस कारेह विष्परामुनह !" ते फासे 'पुट्टे बीरो अहियासए'।

15

अदु वा आयार-गोयर आइक्ले तिक्कया णमणेलिस, अदु वा वह-गुतीए

गोयरस्त अणुपुञ्बेण सम्म पडिलेहार् आय गुत्ते ।

' बुद्रेहे'य पवेहय '।

स समणुने असमणुनम्स अमण वा . (यया २७, १-३.). पर आढायमीणाए-ति वेमि।
20 (५) 'धम्ममायाणह पवेडय माहणेण मईमया '। समणुने समणुनस्स असण वा . (यथा २७, १-३ नवर नो न मणनीय) . ., पर आढायमीणाति वेमि॥

#### 4-3

(१) मज्जिमेण वयसा वि एगे सम्बुज्ज्ञमाणा समुद्विया सोचा वाई मेहार्वाण पण्डियाण निसामिया।

समियाए धम्मे आरिएहिं प्रवेहए ते अणवकस्वमाणा अणहवाएमाणा अपरिगद्मीणा नो 25 परिगदावन्ती । सञ्चावन्ती च ण लोगसि---

निहया दण्ड पाणेहि पाव कम्म अकुन्वमाणे एसमह अगन्थे वियाहिए।

(२) ओए जुरमस्स क्षेयने उववाय चवण च नच्चा;

आहारोवचया देहा परीसह-पनगुरा।

पासहें भे सन्विन्दिए हिं परिगिलायमाणीह ओए; दय दयह जे सिनहाण-सन्धस्स 30 सेवयते । से भिक्स कालते बकते मायते खणते विणयते समयते 'परिगाह अममायमणि ' काले 'युट्टाई नपडिले दुहओं ' किता नियाह '।

(३) तं भिक्ख सीयफास-परिवेवमाण-गाव उवसकमितु गाहावई व्याः—" आउस-न्तो समणा ! नो सलु ते गाम-धम्मा उब्बाहन्ति १" " आउसन्तो गाहावई ! नो सलु मे गाम-धम्मा उठवाइन्ति, सीय-फालं च नो ललु अह सचाएमि अहियासेचए । नो सब्दु में कप्पह अगणि-कायं उउजालेचए वा परजालेचए वा, काय आयावेचए वा पयावेचए वा, अमेसि वा वयणाओ ''। सिया छे'व वयन्तस्स परो अगणि-काय उउजालेचा काय आयावेज्जा वा परावेज्जा वा । स च भिक्सू पडिलेहाए आगमेचा आणवेज्जा अणासेवणाए—चि वेमि ॥

#### 4-8

- (१) जे भिक्सू तिहिं बत्थेहिं परिवृत्तिए पाय-चल्रथेहिं, तस्स ण नो एव भवह . ६ ' चल्रथ वर्थ जाहस्साभि '। से अहेसणिज्जाह बत्थाह जाएज्जा, अहा-परिगाहियाहं बत्थाह धारेज्जा, नो घोबेज्जा नो रएज्जा, नो घोय-रलाह बत्थाह धारेज्जा, अपिल्डिश्वमाणे गामन्तरेसु ओमचेलिए। एय खु वत्थ-धारिस्स सामगिय । अह पुण एव जाणेज्जा : ' उवा-हक्तन्ते खलु हेमन्ते, गिम्हे पडिवन्ने, 'अहा-परिजुण्णाहं बत्थाह परिह्वेज्जा, अहा-परिजुण्णाहं बत्थाहं परिह्वेज्जा, अहा-परिजुण्णाहं बत्थाहं परिह्वेज्जा, अहा-परिजुण्णाहं बत्थाहं परिह्वेज्जा अदु वा सन्तरुत्तरे अदु वा ओमचेलिए अदु वा एग-साढे अदु वा अचेले 10 लाघविय आगममीणे तवे से अभिसमन्नागण भवह । जहे'य भगवया पवेहब तमेव अभित्तमे-ह्वा सन्वमो सन्वयाए समलमेव समिजाणिया ।
- (२) जस्स ण भिक्खुस्स एव भवर ' पुट्टो खलु अहमासि, नाल अहमासि सीव-फास अहियासेत्तए '— से वसुम सन्व-समन्नागय-पन्नाणेण अप्पाणेण केह अकरणाए आडहे, तबस्सिणो हुत सेय ज सेगे विह्नाडए। तथ्यावि तस्स काल-परिवाए, से वि तथ्य वियन्त-कारए। इच्वेय विमोहाययण हिय यह खम निस्सेस आणगामिव—ति वेमि॥

#### 6-4

- (१) जे भिक्खू दोहि वरथेहि परिवासिए पाय-तहण्हिं, तस्स ण नो एव भवह : तह्य वरथ जाइस्सामि । से अहेसणिउजाइ वरथाइ जाएजा ... (यथा ६-१३, मबर अहु या सन्तरसरे पाठो वर्जनीय , तथा वरथधारिस्स स्थाने तस्स भिष्युस्स पाठ पटनीय )20 .... एव भवह . 'पुट्ठो अवलो अहमिस, नालमहमिस गिहन्तर-सक्सण भिक्सायरिय गम-णाए, '(२) से एव वदम्यस्स परो अभिहड असण वा ४ आहट्ट इरूएज्जा; से पुन्वामेव आलोएज्जा " आउसन्तो गाहावई! नो खलु में कप्पइ अभिहडे असणे वा ४ मोत्तए वा पायए वा अने वा तह्य्यगारे "।
- (३) जस्स ण भिक्खुस्स अय पगप्पे 'अह च खलु पहिन्नतो अपिटनतोई, 25 गिलाणो अगिलाणोई अभिकल-साहम्मिएहिं कीरमाण वेयाविदय साहिज्यस्सामि, अह चावि खलु अपिटनतो पिटनत्सस अगिलाणो गिलाणस्स अभिकल-साहिम्मियस्स कुजा वेयाविदय करणाए : (४) विवाह परिन आनक्सेस्सामि आहड च साहिज्यस्सामि, वेआ० प० आ० वा नो सा०, वा नो आ० प० नो आ० आ० च सा०, वा ० ० नो आ० आ० च

नो सा॰, '---एव से बहा-किट्टियमेव धम्म समाभिजाणमाणे सत्ते विरए सुसमाहिय-छेस्से । तत्वावि .... (यवा २९, १६.) ... बाणुगामिय-ति वेमि ॥

### ረ-६

- (१) जे भिक्स्नू एगेण वत्थेण परिवृत्तिए पाय-बिइएण, तस्त नो एवं भवदः ' बिइय वत्थ जाइस्तामि '। से अहेसणिज वत्थ जाएजा ....(यया २९,६-१३ नवरं 5 जुण्णाइ वत्थाइ स्याने खुण्णं क्तथं पठनीय, अपिछ॰ गाम॰ ओम०, तथा अदु वा सन्तदस्तरे अदु वा ओमचेख्य वर्षनीय, तथेव वत्थाधारिस्त स्थाने तस्त मिक्खुस्त भणनीय)....एव मवर्दः 'एगो अहमि ; न मे अत्थि कोइ न याहमि कस्तह, ' एव स एगाणियमेव अप्याणं समिजाणेजाः हाधविय....( यथा २९,१९०)... समिजाणिया।
- (२) से भिक्त् वा भिक्तुणी वा असण वा ४ आहारेमाणे नो वामानो इणु10 याओ दाहिण हणुय सचारेजा आसाएमाणे, दाहिणाओ वा हणुवाओ वामं
  हणुय नो सचारेज्ञा आसाएमाणे। ते अणासायमाणे लाधविय....( यथा २९, ११.)....
  समिश्राणिया।
- (३) जस्स ण भिक्खुस्त एव भवह 'से गिलामीं च खळु अह हमस्मि समप् हमं सरीस्त अणुपुब्वेण परिवहित्तए,' से अणुपुब्वेण आहार सबटेजा, अणुप्पुब्वेण आहार 15 सबटेता 'कसाए पयणुए किया '

### समाहियचे फलगावयही

## उट्ढाय भिक्खू अभिनिव्वुडच्चे

- (४) अणुपितिस्ता गाम वा नगर वा सेंड वा कब्बड वा महम्ब वा पट्टणं वा दोण-मुद्द वा आगर वा आसम वा सिनवेम वा निगम वा रायद्दाणि वा तणाइ जाएजा, तणाइ 20 जाइचा से चमायाए एगन्तमवक्षमेजा, एगन्तमवक्षमिना अप्पण्डे अप्प-पाणे अप्प-बीए अप्प-हरिए अप्पोसे अप्पुट्टए अप्पुर्तिग-पणग-दग-मिट्टिय-मकडा-सन्ताणए पिडलेहिय २ पमिजिय २ तणाइ सन्यरेजा, तणाइ सन्यरेता एन्थ वि समण इतिरियं कुजा।
  - ( ५) त सच . सचा-वाई ओए तिण्णे छिन्न-कहकहे आईयहे आणाईए वेच्चाण भेउर काय
- 25 संनिद्वणिय विरूव-रूवे परीसहोवसभी अस्सि बिम्सम्भणयाण् भेरवमणुचिण्णे । तत्थावि.... (यदा २९, १६)....आणुगाभिय '--ति वेमि ॥

#### 4-6

<sup>(</sup>१) जे मिक्स्तू अबेले परिवृत्तिए, तम्स ण एव भवश ' चाएपि अह तण-कास अहियासेचए, सीय- का० अ०, तेओ-का० अ०, दस-मसग-का० अ०, एगयरे अन्नयरे विरूत- रूवे कासे अहियासेचए; हिरिपडिच्छावण व'ह नो सचाएपि अहियासेचए, ' एव से कृष्ण क काडिवन्यणं धारेचए। अदु वा तत्य परकामन्त भुज्जो अबेल तण-कासा फुसन्ति, सीय- का० फु०, तेओ-का० फु०, दसमसग-का० फु०, एगयरे अन्नयरे विरूत-रूवे कासे अहियासेह। अबेले लाविय....( यहा २९, ११) )...समिश्रवाणिया।

-4-0-1		or Bot - contract		
			च खलु अझेसि भिक्ल्ण	
बा ४ आहटू दल	इस्सामि आहर्ड च साइ	जिस्सामि, <sup>*</sup> जस्स	द० आ०चनो सा०	, ज <del>स्</del> स
नो द० आ	च सा०, जस्तन	ो द० आं०चनो	सिंक, (३) अहंचर	बद्ध तेण
अहाइरिचेण अहेस	णिज्जेण अहा-परिमाति	हेएण असणेण बा	८ अभिकंख साहास्मियसा	<b>কু</b> ত্তনা
			वेयावदिशं साइजिजस्सा	
(३) लाघविय.	, ( यथा २९, ११ ),,,,	प्रमभिजाणिया ।		
(8)	जस्त ण भिन्खुस्त एव	मवर 'से गिल	ामी( यचा ३०, १३-२	₹. }
समए काय च जो	ग च इरिय च पच्चक्र	गएजा। तच	सच्च( वया ३०,२३-२	۲.)
<b>जाणुगामिय</b> —ित				

₹.	८८ अणुपुब्वेण विमोहाइ जाइ धीरा समासज्ज	10
•	वसुमन्तो महमन्तो सन्द नच्चा अणेलिस	
₹.	दुविह पि विश्वाण बुद्धा चम्मस्स पारगा	
	अणुपुब्बीए सलाए कम्मुणाओ तिउद्वर ।	
₹.	कसाए पथणुए किच्चा अप्पाहारो तिइनखए;	
	अह भिक्खू गिलाएज्जा आहारस्तेव अन्तिय,	15
٧.	जीविय नाभिकलेजा मरण नो वि पत्थए.	
	दुइओ बिन सजीज्जा जीविए मरणे तहा।	
ч.	मज्ज्ञत्थो निष्जरा-पेही समाहिमणुपालए;	
	अन्तो बहि विओसज्ज अज्झत्थ सुद्धमेसए।	
Ę,	ज किंचुनका जाणे माउनसेमस्समप्पणो,	20
	तस्तेव अन्तरद्वाए खिप्प सिक्खेज्ज पण्डिए ।	
৩.	गामे वा अदु वा रण्णे थण्डिल पृडिलेहिया	
	अप्प-पाण तु विन्नाय तणाइ सन्धरे मुणी ।	
۷.	अणाहारो तुयट्टेज्जा, पुद्वो तत्थ'हियासए,	•
	नाइवेल उवचरे माणुस्सेहीँ वि पुरुव ।	25
٩.	ससप्पमा य जे पाणा जे य उहुमहेचरा	
	भुञ्जन्ते मस-सोणीय न छणे न पमज्जए।	
₹0.	पाणा देह विहिंसन्तिठाणाओं न विजन्ममे,	
	आसबोई विचित्तोई तिप्पमाणो'हियासए ।	
११.	गन्थेहिं विचित्तेहिं आउ-कालस्स पार्ए;	30
• • •	पगहीयतर नेय दवियस्स वियाणको :	
0 >	अय से अवरे धम्मे नायपुरोण साहिए.	
१ २.	भाग रा अपर पत्म माभ्युपण साहिए,	

		आय-वजा पडीबार विजहेजा तिहा-तिहा।
	१३.	हरिएसु न निवजेजा, थण्डिल मुणिया सए,
		विभासेज अणाहारा पुट्टी तत्थ'हियासए ।
	₹8.	रन्दिएहिं गिलायन्तो समियमाहरे मुणी,
5		तहावि से अगरहे अचके जे समाहिए।
	१4.	<i>अग्</i> पक्कमे पडिक्कमे सकुचए पसारए
		काय-साहारणहाए एत्थ वा वि अचेयेण ।
	१६.	परिक्रमे परिकिलन्ते अदु वा चिट्ठे अहा-यए,
	•	ठाणेण परिकिलन्ते निश्तिएजा य अन्तसी;
10	१७.	आसणि'णेलिस मरण इन्दियाणि समीरए।
		कोला'वास समासज्ज वितह पादुरेसए,
	१८.	जमो बज्ज समुप्पज्जे न तत्थ अवलम्बए,
		तओ उक्कसे अप्याण, सन्वे फासे हियासए।
	१९.	अय चाययतरे सिया जो एव अणुपाळए
15		सन्वगाय-निरोधे वि ठाणाओं न विजन्भमे
	₹0.	अय से उत्तमे घम्मे पुन्वहाणम्स पगाई।
		अचिर पडिलेहिता विहरे चिट्ठाँ माहणे,
	२१.	अचित तु समासञ्ज ठावए तत्थ अप्पग,
		वोसिरे सब्बसो काय 'न मे देहे परीसहा'।
20	<b>२</b> २.	जावज्जीव परीसहा उवसम्मा य सखाय
		सवुडे देह-भेयाए इति पन्ने हियामए ।
	₹₹.	भेडरेसु न रज्नेज्जा कामेसु बहुयरेसु वि,
		इच्छा-कोभ न सेवेज्जाधुय वण्ण सॉपेहिया,
	₹४,	'सामग्रहिं ' निमन्तेज्जा दिव्य माय न सद्हे।
25		त पहिबुज्झ माहणे सन्व नूम विह्णिया।
20	२५.	तन्बहोहि अमुच्छिए आउ-कालस्त पारए:
		तिरक्ल परम नच्चा विमोहन्नयर हिय-ाति वेमि ॥

# उ व हा ण सुयं

## **९-**१

	१-	अहा-सुय वहस्मामि जहा से समणे भगव उद्वाय
		सस्वाएँ तासि हेमन्त अहुणा-पब्वाइए शहत्था ।
	₹,	'नो चेवि'मेण वत्थेण पीहिस्सामि तसि हेमन्ते'
		से पारएँ आवकहाण, एय खु अणुधन्मिय तस्त ।
	₹.	चतारि साहिए मासे बहवे पाण-जाइयागम्म
		अभिरुज्ज्ञ काय विहरियु, अन्रुसियाण तन्थ हिसिसु ।
	8,	सवच्छर साहिय मास ज न रिका सि वन्थग भगव,
		अचेलए तओ चाई त बोसज वन्थमणगारे।
	ч.	अदु पोरिसि तिरिय-भिति चक्खुमासज्ज अन्तसो झाइ।
lO		अह चक्खु-भीय-सहिया ते " हन्ता हन्ता " बहवे कन्दिनु ।
	ξ.	सयणेहिं वीहमिस्सेहि इत्थिओं तत्थ से परिन्नाया:
		सागारिय न से सेवे, इति से सय पर्वेसिया झाइ ।
	<b>७</b> ,	जे के रमे अगारत्था, मीसी-भाव पहाय से झाइ
		पुद्दी वि नामिभासियु, गच्छइ नाइवर्षाई अञ्जू।
15	۷,	नो सुकरमेगेसि नाभिनासे अभिवायमीणे,
		हय-पुरुवो तन्थ दण्डेहि, त्रसियपुरुवो अप्य-पुर्णाहि ।
	٩.	फरुसाइ दुत्तिइनखाइ अइयचे मुणी परकाममाणे
		आधाय-नद्व-गीयाह दण्ड जुज्ज्ञाह मुद्धि जुज्ज्ञाह
	₹0.	गढिए मिट्ट-कहासु समयम्मि नाइ-सुए विसोऍ अहस्त्वू:
20		प्याह सो उरालाइ गच्छइ नायपुने असरणाए ।
	११.	अवि साहिए दुवे वासे सीओद अभोच्चा निक्खन्ते:
		एगत-गए पिहियचे से अभिनाय-दसणे सन्ते ।
	१२.	पुढांव च आज-काय च तेउ काय च वाज-काय च
	674	Ŧ
		पणगाइ बीय-हरियाइ तस-काय च सन्वसी नश्चा
<b>2</b> 5	6.5	'एयाइ सन्ति 'पडिलेहे 'चित्तमन्ताइ 'से अभिनाय
		परिविज्जियाण विहरित्था इति सखाएँ से महावीरे:
	₹8.	' अदु भावरा य ततताए तसजीवा य थावरताए,
		अदु सन्वजीणिया सत्ता, कम्मुणा कप्पिया पुढी बाला '।

śa		आयारंग−स <del>ुर्</del> स	विदेश १
	१५.	भगव च एवमलेसी : 'सोवहिए हु छुप्पई बाले '; कम्म च सन्वसी नच्चा त पडियाइक्खें पावग भगव।	,
	१६.		
	१७.		5
	₹८.		
	१९.	परिविज्ञयाण ओमाण गच्छ इसलिंड असरणाए ।	10
	२०,	अच्छि पि नो पमन्जिया, नो वि य कण्डूयए मुणी गाय।	
	२१.	अप्प बुदए पश्डिभाणी पन्थ-पेही चरे जयमाणे।	
	<b>२</b> २.	पसारेतु बाहूँ परकामे नो अवलम्बियाण खन्धंसि ।	15
	₹₹.	्रस विही अणुकन्तो माहकेण मईमया बहुसो अपडिन्नेण भगवया एव रायन्ते—ारी बेमि॥	
		9-7	
	१.	चरियासणाइ मेउजाओ एगइयाओं जाओं बुहवाओ, आइक्ख ताइ सवणासणाइ जाइ मेवि थ से महा-बीरे।	0
	₹.	आवेसण-सभा प्वामु पणिय-सालामु एगया वासो अदु वा पलिय-दाणेसु पलाल-पुजेमु एगया वासो ।	0
	₹.	आगन्तारे आरामा ारे नगरे वि एगया वासी, सुसीण सुत्र-गारे वा रुक्त मुळे वि एगया वासी।	
	8.	एएडि मुणी सवणेहिं समणे आसि प-तेलस वासे; राहंदिय पि जयमाणे अप्यन्ते समाहिए झाह;	25
	ч.	निहं पि नो पगामाए सेवड य अगव उद्घाए; जग्गावर्ड य अप्याण, ईनि साहयासी अपडिन्ने।	
	۹.	सम्बुज्झमाणे पुनरावि आर्मिसु भगव उद्घाए निक्खम्म एगया राओ बाई चक्रमिया मुहुताम ।	30
	u,	सयणेहिं तस्मुवमग्गा भीमा आसी अणेग-केवा य. समप्पमा य जे पाणा अदु वा पश्चिमणे उनचरन्ति ।	
	۷.	अदु कुचरा उवचरन्ति गांग-रक्ला य सत्ति-इत्था य,	

44 6555	· +-	TO A MAN AREA STORE & CASTOON OF CASTOON OF
		अदु गामिया उवसभगा : इत्था एगइया पुरिसो वा ।
	٩.	इह-छोइयाइ पर-छोइयाइ भीमाइ अणेगरूवाइ,
		अवि सुविभ-दुविभ-गन्धाइ सद्दाइ अणेग-हृवाइं
	₹0.	बहियासए सया समिए फासाइ विरूव-रूवाइ।
5		अरह रहं च अभिभूय रीयई माहणे अबहु-वाई ।
	११.	सयणोहिं तत्थ पुर्च्छिस एग-चरा वि एगया राओ,
		अव्वाहिए कसाइत्था, पेहमाणे समाहि अपिडले ।
	<b>१</b> २.	" अयमन्तरसि; को एत्थ ? " " अहमित " ति " मिन्स्तु " आहर्
		अयमुत्रमे से धम्मे तुसिशीएँ स कसाइए झाइ ।
10	₹ <b>₹</b> .	जिस पोगे पवेवन्ति सिसिरे मारुए पवायन्ते
10	•	तसि प्येगे अणगारा हिमवाण निवायमेसन्तिः
	₹₩.	' सघाडीओ पविसिम्सामा, एहा य समादहमाणा
	•	पिहिया वा सवलामो; अहतुक्ल हिमग-सकासा ! '
	24.	तिस भगव अपिंडने अहे-वियडे अहियासए दिवए,
15	Ī	निक्सम्म एगया राओ चाएइ भगव समियाए ।
	<b>?</b> ¶.	एस विद्दी अणुक्कन्तो माहणेण मईमया
	1 3,	बहुसो अपडिलेण भगवया एव शयन्ते ति वेमि ॥
		बहुता अराव्याय नगपना दुव राजात । । जान ॥
		6-8
	₹-	तण-फास सीय फासे य तेओ-फासे य दस-मसए य
	_	अहियासण सया समिए फासाइ विरुव-रूपाइ।
20	₹.	अह दुचर लाद अचारी वज्ज-भूमिं च मुब्भ-भूमिं च,
	_	पन्त सेज्ज सेविस आसणगाइ चेव पन्ता ।
	₹.	लाढेहि तस्मुवसमा। बहवे जाणवया ल्हाससु,
		अह् छुक्ख-देसिए भत्ते, कुकुरा तत्थ हिस्सि निवरसः ।
	8.	अप्ये जणे निवारेह लूसणए सुणए उसमाणे,
25		' हुच्हुक् ' कारेन्ति आहन्तु " समण कुक्करा उसन्तु " ति ।
	ч.	ए। हिन्स्तर जागे भुज्जो बहने नज्ज मृभि परुसासी,
		लिंड गहाय नालीय समणा तत्थ एवं विहरिंसु;
	€.	एव पि तत्थ विहरन्ता पुट-पुन्वा अहेसि सुणण्हि,
		सलुश्चमाणा सुण्एहिदुच्चरगाणि तत्थ् लाढेहि ।
80	<b>u</b> .	निहाय दण्ड पाणेहि त काय वोसज्जेमणगोर
		अह गाम-कण्टण, भगव ते अहियासण् अभिसमेच्चा,
	6.	' नाओ ' सगाम-सीसे व पारए तत्थ से महावीरे ।

~~	the of properties assessed a property of the first of the contract of the cont	
	प्वंपितत्व लादेहिं अलद्ध-पुन्तो वि एगया गामी;	
٩.	उबसक्मन्तमपडिल गामन्तिय पि अप्पत	
• •	पडिनिक्समितु लूसिसु " एयाओ पर पलेहि ! " वि ।	
<b>१</b> 0,	हय-पुन्वों तत्थ देण्डेण अदु वा मुद्दिणा अदु फलेण	
·	अदु लेखणा कवालेण; '' हन्ता हन्ता '' बहबे कन्दिसु ।	5
	मसूणि छिन्न-पुन्नाइ, ओहुभियाएँ एगया काय	
	परिस्तहाइ लुखिसु अदु वा पसुणा जवकरिसु,	
१२.	उच्चालस्य निहर्णियु अदु वा आसणाओं सलदंसु-	
	बोसट्ट-काएँ पणयासी दुक्ख-सहे भगव अपडिले ।	
₹₹.	सुरो सगामसीसे व सबुडे तत्थ मे महावीरे	10
•	पंडिसेवनाणों फरुसाइ अचले भगव रीइत्था ।	
₹8.	एस विद्दा अणुकल्तो माइणेण मईमया	
	बहुसो अपडिनेण भगववया एव शयन्ते— ति बेमि ॥	
	6-8	
₹.	भोमोबरिय चार्ड अपुट्ठे वि भगव रोगेहिं;	
	पुट्टो व से अपुट्टो वा नो से साइज्जा तेडच्छ ।	15
₹.	समोहण च वमण च गायङभगण सिणाण च	
	सबाहण न में कप्पे दन्त-पन्खालण परिन्नाए ।	
<b>ą.</b>	विरण्य गाम-धम्मे हिं रीयह माहणे अबहु-वाई,	
	सिसिरम्मि एगया भगव छाय एँ जाह जानी यु।	
8.	आयावर्ध य गिम्हाण अच्छाः उक्कुडुण् अधिनावे,	20
	अदु जावहत्थ लूहेण ओयण-मन्धु-कुम्मासेण ।	
۹.	एयाणि तिष्णि पडिमेवे अह मासे य जावए भगव,	
	अपिडत्य एगया भगव अद्ध-मासं अदु वा मास पि ।	
Ę,	अवि साहिए दुवे मासे छ पि मासे अदु वा अपिविन्था,	
	राञोविराय अप्रहिने अन्न-गिनायमेगया भुने ।	25
<b>v</b> .	छहेणमेग्या भुन्ने अदुवा अहमेण दसमेण,	
	दुबालममेण एगया भुन्ने पेहमाणे समाहि अपडिन्ने ।	
۷.	नच्चाण से महाबीरे नो वि य पावम सयमकासी	
	अन्नेहिं वीन कारेत्या कीरन्तु पि नाणुजाणित्था।	
٩.	गाम पविस्त नगर वा घाममेस कड परहाए	30
	सुविसुद्धमेसिया भगव आयय जोगयाण मेविन्था ।	
₹0.	अदु वायसा दिगिञ्छन्ता, जे अन्ने स्सेसिणो सत्ता	
	घासेसणाएँ चिदन्ते सयय निवरण य वेहाण	

	<b>११.</b>	अदु माहणं व समण वा गाम-पिण्डोल्गं व अहर्हि बा सोबागों मूसियारि वा कुक्कुर वा विविहं 1ठेव पुरजो,
	१२.	वित्ति-च्छेय बज्जन्सो तेस'प्यतियं परिहरन्तो मन्द परक्कमे भगव, अहिसमाणो घानमेसित्था।
5	१३.	अवि तृइय व सुनक वा सीय-पिण्ड पुराण कुम्मास
	१४.	अदु बोक्कम पुलाग वा लद्वें पिण्डे अलद्वए दविए। अदि झार से महावीरे आसत्ये अकुक्कुए झाण,
	१५	उड्ड अहे य तिरिय च लोग् झाया माहिमपिटक्षे । अकासी विगय-गेही य सह-रूवेमु अमुच्छिए झार
10	•	छउमत्थी वि परक्कममाणे न पमाय सहं पि कुव्वित्था।
	₹ €	सयमेव अभिसमागम्म आयय-जोगमाय-सोहीए अभिनिब्बुढे अमाइल्डे आवकह भगव समियासी ।
	<b>१</b> ७.	एम विही अणुक्कन्तो माहणेण मईमया।
		बहुमो अपाडिनेण भगवया एव रीयन्ते— ति बेमि ॥

।। समत्तो पढमो सुयक्खन्धो ॥

# अकारादि-शब्दानुक्रमणिका

### --

अद्युक्त अतिवु स अइमाज आतिमान अश्वतिय भतिशृतिक अश्वार्य अतिपातिक अश्वाय अनिपात सर्विउज अतिविच सर्विज्ञं अतिविद्वान् अइविषण् अतिविज **मह्बे**ल अतिबेठ सहित अतिथि सक्तन्त् आकन्द अगणि अभि भगार (यह) अस्त अध र्मनुष्टि — अवा अर्चा सच्छायण बाच्छादन बाब्दि भीक्ष अधिज अजिन १ मञ्ज अंग, २ अरक्का आर्थ अञ्चल आर्त्रव अञ्जविया अर्धवना **१ छा ज्ञारय** अध्यास्म २ अन्तरय अध्यस्त **अज्ञात्थिय भ**ध्यारिमक **अन्द्रभूटप** अभ्यातम अड्ड काले १ अद्भ भय र अहु अष्टन् अद्भ अटम बद्धया भर्यता

१ अष्ट्रिण्० अर्थन्, २ अद्विण् अस्यिन अद्विय अधिक ९ अमृ अणु, २ अणु अनु अणुगानं अनुप्रामम् अणुगाविय अनुप्राधिक अणुटुउण्० अनुम्यायिन् अणुट्टाण अनुष्टन अणुदिस्रा अनुदिश् अणुधिस्य अनुगर्निक अणुपस्सिण्० भनु १र्शन अणुरुव अनुपूर्व अणुवस् अनुवसु अणुवीर् अनुविचि अणुमांचयण अनुसर्वदन अण्ड्य সত্তর अत्तण् आन्धन आ/मःव असमा आत्मका,-आत्मत्राण अस्य नव अस्थिण० आंधन् अदु यद उ **अनुया य**दुउवा,-परिवा, यद्वा १ बद्धः अवन् **३ अड**∼अर्थ **अन्तराहय** आन्तर-थिक

अन्तरमी अन्तर

अन्तिय अन्तिक

अन्धत्त अन्यस

**अन्तो** भन्दर

**छान्छ** अन्य

अञ्चरध अन्यत्र अन्नयर भन्यतर अञ्चा अन्यथा यन्नोसिय अश्रेषिक अच्च अस्य अप्पन आत्मक अप्पण् भाग्मन अहभराण अध्यह्न,-अध्यजन अभिताच बिभवाप अभिनाय आभिवात अभिसांकेण्य अभिशङ्किन् अभिसंय अभिषेक अमरायन ( अमर इवा अभरायर चरति ) अभिवल आस्त्र अर्थ (सर्वनाम ) अय, अणेण,ध स्म, अस्मि अरहस्त्० अर्हत् अरिष्ठ अहं अविद्वह अईति अलद्भग अलम्ब अवं अवाज्य अवचर्य अपन्यिक असम हीन अवमारिय अवस्मारिक अययद्वि अवतीष्ट अञ्चर अपर अवस्मक्रिण्० अपध्यक्तिन् अचि भापे अस् (,पातु ) असि, अरिव, सन्ति, सिया, अधिया, आधि, सन्त, अक्-

धि म

असण अशन	<b>माणुधिमय</b> आनुधार्भिक	आह्य (आहल)
अहु (थातु ) आहु, उदाहु, आहूय	आए (घातु ) मायनर, आत्तनर,	आहरण —
1 मह अथ	पत्त अपत्त, पाय	आहाकट यथाकृत
२ मह अधस्	आम अपक	आहार
अद्धं (सर्व०) अद्गुम, मए, मम,	आय,-या भारधन्	आहारग आहारक
महं, मे	आयग जात्मक	इ ( धातु ) एन्ति, उवेइ, एका, अ-
अद्वर्श यथा	<b>आयंक</b> अातर्क	चर, अंदय, समेंद्र, समिय, समेचा,
अहिय अधिक	आयत्त भारमत्व	अभिसंभेषा
<b>अदुण</b> । अधुना	आययण आयतन	इओ इतस्
बाह्य अपस्	<b>आयरिय</b> आचार्य	इच्च० इति ( इच्चश्य≔इत्यर्थ )
महो अधर्	<b>आयबन्त्</b> ० आत्मबन्त्	रच्छा —
१ आही अहर	<b>आयःण</b> आदान	इण (एण) इदमर्थक
र आहो (अध्ययं)	आधार आचार	इति (इच्च़∙)
	आरस्भ (पापजनक प्रमृति)	रचित्रम ।
आइ मादि	आराम —	इसिरिय } इत्वरक
आइय भादिक	आरिय अाय,-आचार्य	शन्धिया क्रीका
<b>आई</b> थ आदिक,-आ अतीत	आलर्य आन्धिक	इत्थी स्त्री
१ आउ आपस्	आलुम्प —	इन्दिय ६न्द्रिय
९ आउ भायुस्	भाराभिण० आसोभिन	इम (सर्वनाम ) इम, हमा, हमेण,
<b>आउद्दी</b> आक्टी	आवकहा यावरकथा	इनस्स, इमान्म, इमे, इमाओ
<b>आउ</b> थ भायुष्ड	आवह आवन	इय इति
भाउर अतुर	आवन्त्र याव-न्	इयर इतर
<b>आउरिय</b> भा <b>तु</b> रक	अ <b>विसह</b> भावस्थ	१याणि इदानिम्
<b>माउसन्त्</b> ० भायुगमन्त	आवह —	श्रदेया ६वा
<b>आएस</b> आवेश	आवास ्—	इव, व इवाधक
<b>आएसिण्॰</b> भावेशिन्	आवसण अधिशन ( शुन्यगृह् )	१ इप ( भादु ) एसे, एसन्ति,एसए,
माकंखिण० आक्रांबिन्	आसा ( યાદ્ર / ગામનુ, આમેનુ,	एसित्था, एविया, अनेसन्ति, •सि-
<b>माकेष</b> ळिय आकेदलिक	<b>बान्ती</b> य, ∍दःसील	न्ति, पादुरेसए, पाउद्वरसए
<b>भागद</b> आगति	आस नाम (प्रातराश द )	र इप (धातु ) इच्छसि, इस्छिया-
मागन्तार प्रवस्या याखा भागना	. <b>आसंस</b> / जाना	नि:च्छय
बा यत्र तिष्ठन्ति ( व्याख्या )	अ,सण अधन	शसे ऋषे
भागमण अश्यमन	अस्मित अस्तर	इह(हं) इहार्थक
<b>प्राचामिस्स</b> आगमिष्य	<b>अःसम</b> भावन	
मागर भारत	<b>आस्व</b> अधि	इंक्ष्म (बातु ) उपेहर, उपेह, उपे
मागास आकाश	आसा आसा	हाइ, उनेहमाण, अणुवेन, अणुवेन
माघवेत्रम भारत्यापीयत्क	आसाय आखाद	हाए, उरेहा, समुप्रेहमाण, समुवे-
भागस्य आवन्द	આસુ નાગુ	हमाण, पेहमाण, ॰ भीण; देहाए, संपेहाए—संपहाए, संवेहिया
माणा भाका	आसेवणा आसवना	इंट्यू ( धातु ) शिय, उदीरिय, स-
माणुगामिय आनुगःमिक	आसेघणया आसेवनता	भारण
सञ्चलामय जापुरातक		417.

प्रसि ईवर्  उ तु  उक्काह्य उत्स्टुक  उग्नायण उद्धातन  उक्का उक्नाविक  उक्कालप्रस्- रे उक्नाविक  उक्कालप्रस् रे उक्नाविक  उक्कालप्रस् रे उक्नाविक  उक्कालप्रस् रे उक्नाविक  उक्काह्य उक्काह्य, सञ्जु  उज्जुकाह्य, के कुन्नकर्म, कुन्  उक्काह्य अर्थ  उक्काह्य अर्थ  उक्काह्य अर्थ  उक्काह्य अर्थ  उक्काह्य अर्थ	जनराय उपरात्र  उ (भी) ववाइय भी  उववाय उपपात  उवस (स्त ) मा उप  उवसान्त उपधान  उवसान्त उपधान  उवहाण उपधान  उवाह उपधि  उवारा उपाय  उवाह उपधा  उन्हेग उदेग  उसाणिज उप्णीय  उसिण उप	पर्वं एनमर्थक पर्वः एनमर्थक प्रपादि (ति)क प्रस्तः एव
उक्कृकृय उत्ध्रुक उग्धायण उद्धातन उद्धाः उच्चार्यक उद्धाः उच्चार्यक उद्धाः अवस्थित उद्धाः उद्धाः अवस्थित उद्धाः उद्धाः अवस्थित उद्धाः उद्धाः अवस्थित	उ (को) ववाइय की। उववाय उपपात उवसाय उपपात उवसाय उपपात उवसाय उपपान उवसाय उपपाम उवहाण उपपाम उवहाण उपपाव उवाहि उ₁ि उवाय उपपिक उवाहि उगि	पपादि (ति)क यस एव  पसग एवक  पसग एवक  पसगा एवणा  ससिण्० एविन्  ग्रह एव  शो वासगप्रणार्थक  शोगाह अवपह  शेह भोह  शोम अवग-होन  शेमगण अवगन  शोपण भोडन
उक्कृकृय उत्ध्रुक उग्धायण उद्धातन उद्धाः उच्चार्यक उद्धाः उच्चार्यक उद्धाः अवस्थित उद्धाः उद्धाः अवस्थित उद्धाः उद्धाः अवस्थित उद्धाः उद्धाः अवस्थित	उववाय उपपात उवस (स्व ) मा वर उवसन्ति उपधान्त उवसम् उपधम उवहाण उपधान उवहि उरि उवहिय उपधिक उवाहि उपि उवहा उपे सा उव्हेग उदेग उसणिज उप्पाय	पसम एवड  पसमा एवजा  पसिण्ण एविन्  पह ए४  स्रो वाङ्मप्रणार्थेड स्रोगह अवधह स्रोड भोड स्रोम अवग—होन भोमाण अवगान स्रोपण भोडन
उग्धायण उद्धातम उद्धा उच्चार्यक उद्धा उच्चार्यक उद्धालहरूर   उद्यालभिक् उद्धालहरूर   उद्यालभिक उद्धालहरू व्यालम् उद्धालहरूर   व्यालभिक उद्धालहरू व्यालम् उद्धा-उज्ज्ञु ऋजु, अञ्जु उज्ज्ञुकहरू, ऋज् उज्ज्ञुकहरू, ऋज् उज्ज्ञाहणू० ज्यामिन उद्धा क्र	उवस (स्व ) मा वर उवसन्ति उपशान्ति उवसम उपशम उवहाण उपधान उवहि उःधि उवहिय उपधिक उवाय उपाय उवाहि उपशि उवेहा उपेशा उव्वेग उक्षां उसिण उपाय	पसणा एषणा प्रसिष्० एषिन् पद्ध एप स्रो वाक्ष्यप्रणार्थक स्रोग्यद्ध अवस्र स्रह स्रह स्रोह स्रोह स्राम् स्रवस्था स्राम् स्राम स्रा
उद्याः उष्यार्थकं उद्यालपृष्ट् } उत्यालित् उद्यालपृष्ट् } उत्यालित् उद्यालपृष्ट् } उत्यालित् उद्यालपृष्ट् द्वात्व उद्धान्यपृष्ट् क्राय्यान् उद्याहण्युष्ट्र अर्थायिन उद्याहण्युष्ट्र क्राय्य	उवसन्ति उपधानित उवसम उपधम उवहाण उपधान उवहि उपधि उवहिय उपधिक उवाहि उपधि उवाहि उपधि उवाहि उपधि उवेहा उपेधा उवेहा उपेधा उत्थेग उमा	ससिण्य एविन्  ग्रह एव  शो वाक्ष्मपूर्णार्यक  शोगाह अवधह  शंह भोह  शोम अवग-होन  शोमाण अवगान  शोप भोज
उषालश्चर्-   उषालभिव् उषालश्य   उषालभिक उषावय उषाव उजु-उज्जु ऋजु, अञ्जु उज्जुकश्च,- हे ऋजुक्त, ऋज् उक्षाश्चर उष्याभिन उद्द कर्ष उपद्व करम	उत्सम उपशम उवहाण उपधान उवहाण उपधान उवहि उःधि उवहिय उपधिक उवार उपाय उवार उपाय उवार उपाय उवार उपाय उवेहा उपेहा उद्येग उ≳ग उसाणिज उणांस	मह एव जो नाक्षपूरणार्थक जोगाह अवधह जोह भोह जोम अवम-होन जोमाण अवमान जोग भोज
उषालह्य ∫ उषानिक उषावय उषावष उजु-उज्जु ऋजु, भञ्जु उज्जुकाइ,-डे ऋजुकृत, ऋज् उक्काइण्० उस्यापिन उद्द कर्ष उण्ह क्रुष	उपहाल उपधान  उपहि उ।धि  उपहिय उपधिक  उपादि उपधिक  उपादि उपधि  उपादि उपधि  उपहि उपधि  उपहि उपधि  उपहि उप्धा  उप्यापि उप्पा  उप्याणि उप्पा  उस्पि उपा	को नाम्यप्रणार्यक कोग्याद अवध्र काह कोह कोम अवस—होन कोमाण अवसान कोग्य कोज कोग्यण कोहन
<b>ওজাবয়</b> ওজাবন উ <b>ন্ত্ৰ-উড্ডে ছ</b> ন্ত, মাত্ৰ উড <b>্ডাক ছ</b> ,— <b>ট</b> ছন্ত্ৰছন, দুৰ্ উ <b>ন্তঃগত্</b> ও সম্যাদিন উ <b>ড্ডে</b> &জি উ <b>ড্ড</b> ক্ৰম	<b>उघहि</b> उःधि उ <b>चहिय</b> उपधिक उ <b>चाय</b> उपाय उ <b>चाहि</b> उपधि उचेहा उपेझा उच्चेग च≩ग उसणिज उर्जाय उसिण उपा	ऑग्ग <b>ाइ अ</b> वध <b>इ</b> ऑह ओह ओम अवग—होन ऑ <b>माण</b> अवग्रान ओच ओज ओ <b>चण</b> ओहन
<b>তন্ত্র-তন্তন্ত</b> দ্বন্ত্র, ঋতন্ত্র ভ <b>ন্তন্ত্রকার,—ই</b> দ্বন্ত্রকার, দ্বন্ত ভ <b>ন্তার্থ্য</b> ় ভদ্মানিন ভ <b>ন্তর</b> জন্দ ভ <b>ণত্র</b> জন্দ	उचिह्य उपिक इक्काश उचाय उचाहि उपिक उचेहा उपेक्षा उच्चेग उन्नेग उसाणिज उच्चीय उसिण उप्म	ऑग्ग <b>ाइ अ</b> वध <b>इ</b> ऑह ओह ओम अवग—होन ऑ <b>माण</b> अवग्रान ओच ओज ओ <b>चण</b> ओहन
उज्ज्वकड,-डे ऋजुक्त, ऋज् उक्षादण्- उत्थामिन उद्द कर्ष उण्ड करम	तुकारी <b>उद्याय</b> उपाय <b>उद्याहि</b> उपाधि <b>उद्येहा</b> उपेश्वा <b>उद्येग</b> उद्रेग उ <b>साणिज</b> उष्णीय <b>उसिण</b> उपा	સંદુ બોફ <b>એામ અવમ—દોન</b> એ <b>ામાળ અવનાન</b> ઓપ એ\ <b>ઝ</b> એપ <b>પળ બો</b> હન
<b>उहार्ण्०</b> उस्मामिन् उ <b>द्द</b> कर्ष <b>उपद्व</b> करम	<b>उचाहि</b> उपश्वि <b>उचेहा</b> उपे <b>छा</b> उच्चेग चट्टेग उसणिज उप्णीय उसिण उप्म	भें।माण अवग्रान श्रीय भोज भोयण भोइन
उ <b>ब्ह</b> रूर्ध उपद्व करम	<b>उनेहा</b> उपे <b>हा</b> उन्हेग चट्टेग उसणिज उष्णीय उसिण उप्म	भें।माण अवग्रान श्रीय भोज भोयण भोइन
उपह् ऊष्म	<b>उच्चेग</b> चडेन उ <b>सणिज</b> उर्घ्णाय <b>उसिण</b> उप्प	ओयण भोदन
	<b>उसणिज्ञ</b> उर्घ्याय <b>उसिण</b> उप्रा	
- 4.4	उसिण उन्म	ओयरिया और्द्य
उत्तर —		
उत्तासद्द् उत्त्राष्ट्रितृ		बासा नवस्या
<b>उत्तिम</b> —		ओ <b>्बाइय</b> भागपादि(ति)क
उद उदकार्थक	ऋ ( बातु ) अरछ्य	आंह भोध
उदय उदक	थ — (सर्वनाम) एहि	मोद्दाण अववान
उदीण उदीवीन	<b>पक्क</b> एक	- (
उद्दरत्तर्० }	एग (अनेग) एक (अने	क ( सर्वना • ) के, की, का, कि,
उह्रवेसर्० । उद्भ प्रितृ	पगइय एकतिक	
उदेस बोग	पगओ एकतम्	किंचि, आक्रेबण, कवण, कस्सह,
जिम्म चित्रह	धगस एकत्व	कहिनि, केइ ( बहुक), क्रेय
उभय	पगन्त एकान्त	कआ कास
उस्मन्ता ।	पगयर एकत्र	कामलाख ,-०ट वर्षश
उम्मुन्या े उम्मम	पगया एकदः	केंग्रा कोसा
डम्मका	पगामिण् एक्षकिन्	कास्त्रिण् कासिन्
उम्मुखा } उन्मजा	पंगाणिक	काञ्च कार्य
उपर उदर	पज बायु	कह काप्र
उयरिष्0 उदिरिन्	पण, रण (सन०) एन-एव पत्थ (स्व ) अस	<b>年度 , - + と 変</b> 力
अयाद्व उताही	यत्थ (त्य) अत्र	
<b>डर</b> उर <b>ध्</b>	पय ( वर्षे । प्रकार	कह्य कद्रह
उरात्व स्वार	पय ( वर्ष ० ) एतद्वेक-गर	य, ए- कण्टना ७.ण्ट∜
उपकारम उपकार	याओ, एयस्म, एए, एशाइ, ए एएडि, एगमू	रियानि काण्ड्रसः काण्डकः
उवगरण उपहरण	प्यायन्त् ०१तावन्त्	कण्ड्य (थाद्र) कण्ड्यए
उवसह्य उपनिष्	पालक्सम इंड्सइ	कण्या कर्ण
<b>उवस्य</b> उपबद	पिलिका (अलेकि )	फत्य क्रम
उक्रइ उपराति	पिछस (अगेकि-) ईडश (अनीत एक, क एवार्थक	<sup>१०)</sup> कत्थाइ क्रमचित
	च्या प्रायक	कथ्य (भातु) कविन, परिकारिकार

करिस्सामो, करन्त्र,-अकुर्वन्त्, करघ स्कन्ध कुळ्वशाण, गह, अफड, दुक्क, सुकह, काहीं य कथिक कृष्य इस क्रय, किश्यि, कायव्य, अकराणिज्ञा, कि कडबाड कर्वट **अकर्**णीय,कर,ि चचा,कजाइ,किजाई, करप् ( धातु ) अविकस्पमाण कि हा कि हा कजनित, कीरन्त, कीरमाण; कारेड् किएड कृष्ण कम्बल किस्ति ( अकि॰ ) कीर्ति (अकी॰) कारेन्ति, कारवे, कारेत्था, कारावेस, कस्य कर्भन् काराविस्सं, काराविस्स्र, कारावेस्स, क्रय (विक्य) क्रम (विकय) किमण कृपण **किरिया** किया पकरन्ति, पकंपन्ति, पकुष्वइ, पकु-क्रयधर कबदर किय (चि)ण कृपण व्यमाण, पगइ, सखय कयाइ कदावित् किस कुश २ कु (धातु) उवकरिंसु कर,० री किह स्था **रुश् (,, )** कमेइ करण कीर्नय (धातु) किहह, विहे कृष् (,, ) उक्रमे, उक्कसिस्सामि, करणया विडक्स, बुद्धांसम्सामि, अवकस्सण कुआ कुनस् कलह कुक्कुय की कृत **ह्राप्** ( धानु )ः नित्पद्द, पद्मणेद्द, द्रुप्ये, कत्त्रुण कहण कांध्या, पकव्यशन्त, पकव्यन्ति कु **वकुर** कह्याण कल्याण कुच् (वातु) अपलिउद्यमाण, स-कयण केतन कवाल कप क कुद्ध, सकुविय, सकुवमाण कोट्ट ६४ **कशा**य (बादु) कसाइ-था कुचर बोरी पारदारिया व (ध्याह्या) काहिण-कसाइय, सकसाइय कपायस ,, कुट्ट् (बातु ) आउद्दे, बिउट्टन्त क्रोडि ण-कसाइए (घुणा,उद्देहिया वा;भ्यास्या) क्रुडिण्० कुछिन् कसाइण्॰ क्यायिन् कोधिय ७।विद क्रिणिय क्रिंगिक कसाय कपाय कोह कोव कसायय क्षायक कुण्टत्त कहंकहा क्यक्या कुण्डल ऋन्द्र (धातु ) कन्द्र, कन्द्रिषु कुल्त क्रम् (धानु ) चक्तित्ता, चक्तिय. कहा क्या কাত কাৰ कुरुतग कुरुतक चक्कांमय, उबाइकन्त, उबाइक्क्स, कास् ( খাবু ) : ৬क्षेज्ञा, अभिव • ক্কুণ্ ( খাবু ) कुण्यन्ति, कुल्येज्ञा अभिक्न, अभिक्नमाण, अणिमहमे, क्षेत्रज्ञा, अवकल६, अवकलिन, कुरुआर अणीभक्रममाण, अवेक्षेत्रजा, अव-अणव्कसमाण, • कक्षे • क्रभित्ता, अक्तत, अणुक्रन्त, विड-寶. 4月 夏日 क्रम्म, निकल्त, दुःविगकल्त, निकम्म, कुम्मास कुल्माप काणत्त क्षाणित्व अभिनिकन्त, पश्चितिकमिन्, पढि-काणिय <u>ත</u>ල 町の布 क्रमे, पांडक्रममाण, परक्रमे, परइ-कुस कुश काम भेजना, परक्रभेजनाथि, परक्रमन्त, का(मिण्० कासिन् कुसल कुशल परक्षममाण, दुगरलन्त, विष्यरि-कुर्साल कुशील काय क्रमन्त्रि, विष्यरिकम्म, उवसक्मन्त्र, **कायर** कातर कूर कृर उवसकीभत्ता, उवसकीमतु १ क्ट (धादु) करेमि, करेड, करेल्लि, कार करए, कुउजा, कुव्यह, अकरेबु, ऋते (धातु) किये, किणावेह, कि-कारण णन्त, कीय अकरिस्य, अकासी, अगास, कुब्बिन कारिण्० बारिन् त्या, करिस्यं, करिस्सामे, करिस्सइ, कुध् ( ,, ) कुण्झे काक

कुञ् (धातु) अक्कुह, आकुह	् ग <b>ण्डिण्</b> ॰ गण्डिन्	<b>जुष्फ</b> गुरूफ
इहस् (,, ) किलामेयव्य, परि	के- गम्थ प्रन्य	<b>मुण्यता</b> गुल्फक
<b>स</b> न्त	गन्ध —	<b>नु</b> रु —
क्किंग् (,,) किलेसन्ति, परि		जुरुग गुरुक
सेस्रित	गम् (धातु) गच्छाइ, गच्छान्ति	, मुद्दा —
क्षण्(") छणे	गच्छाजा, गय, गामलए, अइयर	ं गृ (धातु) आन्दन्ति, जागित्ता,
क्षिप् (,, ) निक्सिके, निक्सिल	ı— अणुगन्छन्ति, <b>अणुगन्छ</b> माण, अण	- जग्गवह
क्रण क्षण	णुगच्छमाण, आगममाण, • मार्ग	ं गृष्ट् (धातु ) गिअसे, गिद्ध, भणु-
सर्पाय क्षणक	भागय, भागमेत्ता, भागम्य, सम	ि गिद्ध, परिशिजशह
बन् (धातु) सण्ह	न्नागय, असम॰, अभिसम्नागय	
सारध रकत्थ	अभिसमागस्य, नियच्छन्ति,।वेगयः	
काम क्षम	राम-यया पारगम, शीरगम	गोय गोत्र
स्तर क्षय	गमण गमन	<b>गोयर</b> गोचर
बालु, खु, दु सत्दर्यक	गरहा (अगरहा) गर्दा (अगर्दा	
स्त्रवय क्षप्र	गरुय गुरुक	द्रास्य प्रद्रात् ।, गहिय, गहाय, भ-
<b>स्वार्म क</b> ादिम	गल —	भिनिक्तिज्ञा,अपरिभादमाण,० भीण,
स्त्रिस् (भातु) विसर स्त्रिप्य क्षित्र	गरभ् (धातु ) पगन्नइ	अवस्थिमहेमाण, परिनिज्ञ, पनादी-
	गवेष् ,, गवेसिस्था	यतरा
खु सङ	गर्धसग गर्वेषक	म्हा (धातु ) मिलाए में, मिला-
खुजिय कुन्जब	गह ( अगह ) प्रह ( अप्रह )	णानि, गिलानी, गिलाइ, गिला-
खुइग-खुड्डिय धुइक	गाम प्राम	एउजा, गिलायन्त, गिळाण, अगि-
केंद्र सेट	गामिण् गानिन्	स्राण, विलाय, परिगिला <b>यमाण</b>
वंश क्षेत्र	गामिय प्रामिक	घर गृह
केम क्षेम	गाय गात्र	घस (धातु ) परिचासम्म, दिगि-
सेय क्षेत्र	गार अगर	च्छन्त, दिगिन्छन्त, दिगिदि <b>छ</b> न्ता,
बेयम बेदश,-क्षेत्रश	गाह (धातु) अभिगाहड	दिशि <b>न्छ</b> न्ता
क्या ( धातु ) अक्लाइ, अध्याद	, गाह्य (गाहिया ) ब्राहक (ब्राहिका)	
आषाह, अहक्कामा, आहक्खह अहक्कान्ति,आहक्के,आहक्खेरजा		<b>धानय्</b> (धातु) घायए, घायमाण,
भक्षाति,आइक्स, अभ्यादस्सामो		चै'यभीण
काइक्समाण, अक्लाय, अश्वाय		घास्य प्राप्त
भाषाय, आसाय, अन्यादकसद		ष्ट्रपु ( बातु ) परिघेत्तव्य, परिघेयम्य
सन्भाद्दक्खेज्जा, उदाद्दिय, परच	्रिक्टिकिक क्रिक	घार —
क्साएउजा, पवियाहक्से, अब्बा-	ांगळासिणी श्रांस <b>ी</b>	
हिय,बाहिय, विक्खाय,-वियक्खाय,		चा, (या, या, अ.) च आर्थक
वियाहिय, सचिक्सह, सम्राए,		चउत्थ चतुर्प
वयाह्य, चायपचर, सकाए, <b>स</b> काय: पडिसकाय		चउापय चतुभद
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	<b>नुण</b> —	चउरंस नतुरम
ग यथा पारम रसम	गुति ग्रित	चक्तु वसु
गद गवि	जुए (भाव) ग्रत, अग्रत, बुगुन्छमाण	चक्तारि वस्तारि

चरम चर्मन	छट्ट पष्ट	जाण यान
स्यण च्यवन	स्त्रण क्षण	जाणस्य जानपद
चय —	छुण्ण क्षणन	ত্রাত্ম জাব্র
खर् ( घातु ) चरे, चरेज्जा, अवारी,	छद् (धानु) पतिओष्छन्न,पति	जाम याम
अणुविण्ण,उबन्दरन्ति,उबन्दरे, बिय-	<b>रछन्न, प</b> ₹छन्न	জায জার
रिसु, सचरित्रज्ञा, भणुसचरह	छन्द छन्दम्	जाया यात्रा
चर	<b>छाया</b>	आवन्त्, जाव बावन्त् , बावधी-
घरिया वर्ग	छिद् (धानु) छिज्ञह, छिन्देज,	बयू , यादञ्जी
	छिन्दह, छिन्न, छिना, बोच्छिन्दे-	जि ( धातु ) विश्ता, विएतु
लिय	जा, अञ्जारिस्क्रम, अर्छे, अर्छेज	
चल (अयह) —	पॉरचिछ न्दिय, पॉलि॰	जिच्छा
<b>चवण</b> (चयण) •यवन	खु ् बुङ्- (दुरछ्क्कारेन्ति )	जीव् (धानु) जीविस्सामी, जी-
चाइण- सागिन्	<b>छन्मर्</b> –छेन	विड, जीविड- <b>काम</b>
चाय (धातु) निकाय, (निका	ी हेया छेक	जीव —
रय, निचार निकाएं कण, नि-	२ छेय छेर	र्जारविण्- जीविन्
काएयव्वा)		जीविय जीवित
चारिण- चीरन	ज यथा अण्डज वानज	जीहा जिव्हा
<b>१ चि</b> (धातु) ससचियण	उत्त ( सर्वनास श्रा) जे. (एक-वह • )	जुर्मन्त्० युनिमन्त्
२ चि ,, अणुबाइ(य)	जो, ज जा, जेग, जाए,	जुज्झ युष्य
भणुवि।चय	जस्म, जामे, जाइ, जाओ, जेहि,	ज्ञास्त्र थड
चिद्वा वेष्टा	जैमि, जमु	जुप् (वातु) कायमान्य नया
चित् (धातु ) चेगामि चेएइ	अर यदि	सयन्त
<b>्चित्त</b> (अविन् )	जओ यन	त्र् (धातु ) जूरह, जूरह
चित्तमन्त वित्तमन्त्	জঘ —	जु ,, जरेहि, जुण्ण, परि-
चित्तमन्तग ,	जण जन	ন্ত্রত
चिन्तम् (धातु) अणुविचिन्तिय	जणग जनक	जीग योग
चिर —	जणवय जनपद	जो गया ्यागता
चुद् (धातु) नुइय (चोइओ)		जोरिंग योगि
चेद् चयद् (स्यज्)	जन्, जा (धात्) जायइ, जाय,	जाणिय यानिक
चेयण (अवे॰) चेतन (अवे॰)	जणयन्ति, अभिसजाय	जोठत्रण योवन
चेल (अवे०) वस्त्रार्थक	जन्तु —	श्चा (धातु) जाणइ, जाणेजा,जाण,
चलग, चिलिय बेलक	जम्म जन्म	अाणे, जाणाहि, जाणहे, जाणहे;
बेप् ( धातु ) विपर्शिचहर, परिवि- चिहिन्नु		कार्यमा अज्ञासि, जाणन्त, अजा-
	जराउ जरायु	णन्त्, अयाणन्त्, जाणित्ता,जाणि-
चोर चीर	जहा यथा	स नरवा, नरवाण, अणुवाणह,
<b>च्यु</b> (धातु) चुय	<b>जाइ</b> जाति	अणुजाणए, अणुनाइ, अणुजा-
	जार्य जातिक	णित्या, समणुजाणह, स॰ जाणाह,
छ बद्	ज्ञागर —	स• बाणेबा, स• जाणनाण,

तद्य नृतीय

तक्या ननः

तंस भ्यश

तच तरन

**तक्का** तको

बर्सण, अभिजाणह, •गण**ह, भ-तण** तृण भिनाय, धनभिजाणिया, स॰ तसी तत जाणेळा, स॰ जाणाहि, स॰ जाण- १ तत्था तत्र माज, भवगाणह, अवयाणन्त्, आ ६ ऋत्धः (अत०) तथ्य (अत०) तिहा त्रिचा जाग, आयाण, शायाणह, आ- तत-गाए, आणबेखा, आणावेज्जा, तन्हे-अन्जावयव्य, आणावे॰, परिजा- तप्-गामि, परिजाणह, परिजाणह्न, तक् (धानु) आयांवरुत्रा, आया- तुच्छ वई, अभिनाव, आयावयह, आयाव- नुच्छम नुन्छक अप॰, वरिद्राय, अप॰, सुप॰, मु॰ त्तए प्यावेज्जा, प्यावेत्तर्, परित- तुम (स्थलाम) स्वस् , तव, ते, काणियव्य, सु॰ झाए, मु॰ झाया, प्यइ, परिनण्यमाण, परियाविण्य- नृहम, तुल्झ भ सुपन्नत, पन्नवेसी, पन्नवेह, पन-नित. व्यावञ्जनित, व्यावेनित, तुला बेन्नि, पाडिन्नरा, अप॰, विजाणह, विजाणन्त्, विया॰, आवि॰, वि-• यावए, • यर्शवय, • योषयव्य माय, दुव्दि वियाणिता त्रण्- तद् उद्यूल ( धातु ) उज्जालेत्तए, पण्या-तम तमम् क्षेत्रए, पञ्जाकेता तर (ग)—(०**क**) तर्क (धानु) तक्षियाण, **ब्रह्मा** (माया-लोभेच्छाः व्याख्या) तच नपम् **सायिण-**ध्यायेन् तवस्मिण - नपस्वन् इन्ज ध्यान तम्-तद् सिमिय जिम्हिक (अलम्यवाही) तस श्रस हुस् (धानु) झोसड झाममाण, तसत्त त्रमध्य ॰मीण, झोमिय, हुज्जोसिय तह (तथ्य) नहा न्या ठाण स्यान तहागय तथागत इरुड दण्ड ताण शर्म तारिस ( अता॰ ) तार्श (अता॰) धं स्थ यपा~अगारस्य आमणस्य, डाह दाह र्णं नुनम् तारिसय नान्धक पहारुणी हायुनी तालु त (सर्वना ०) तदयंक त, ३१, स-ताच नादन मासगत-तद् यथा तञ्जासमाण, नि शनि तिहेहीय, नेण ( -ण ), तम्हा, त-निर्वका निविक्षा स्म, तैसि, तस्मि, ते, नाइ, नाई, निक् (धातु) निग्यद, निग्यसाण नेसि, नेसु तिञ् ,, निध्नतण, निध्नयमाण श्रुल म्यूल

निर्णिण श्रीणि-निर्वि

निस निक्त

निय शिक

तिरियन निर्मर्

तिरिच्छ तिरिय तिसिद्ध त्रिविध 3 तामणीय न्छन्ड ह्य ( भारत ) नरह, ात्रक्य, तारेत्तप् अबहण्या, पहण्या अन्बहण्या সম্ভন্তা বিকিশা ने उ. तओ नजस् तो अतम् त्यात (भार ) सह=स्यह स्यान्त, चार चणामे, जाग्म्समा, भयाई, बहुना, खल्ला (०ण), बाएसि, चाएर "परिषयांत्र पंतवाना, परिश्वज, सवागरी चस (धानु) तमान्त, परिवि-लयरिन, पांगतेनिकेला व्यवसंय (धान) नुयहें जो छाउमन्थ, भवत्य, भजनाय श्रुषा स्तर थडिल,-॰हा स्थां**प**त द्यावर स्थावर धावर्भ स्यावश्व धी जी शांव स्तेक

वंस् (धानु) इसन्तु, इसन्तु, द-

सन्तु, डसमाण, इसमाण, दसमाम

दिश् (धातु) देखिय, समुह्स्सि, देह र्षस रंग वंसण दर्शन पदेसिय वो है देसिण्० दाईन् विसा दिश् वोषमृह शेषमुख द्वा उदक दि (धानु) क्षये-दांण, असदीण, दोस दांव दब दब सदइ सदिब्बह वा सर्दाणो धारम पर्म व्यष्ट, स्टब्स -र्वाव दीप धरमय धर्मक व्यत ---वांह दार्घ **धारमधन्त्** धर्मवन्त् दं दस्त दुक्ख दुल धम्मिण्- धर्मन् दम --दुविभाग- दुखिन् चा ( पातु ) हिय, अहिय। आखाए-टय (भानु) इयइ दह्य द्गञ्छणा, दुगु० जुगुव्सा मि, काडायमाण,०मीण, आडाय-दया -चुग्गाइ दुगंनि माणाग, अणादा॰, समाहिय, सु-दरिसण दर्शन दुखर दुधर समाहिय-; निहे, निहेळा, निहास, दक्षिय इब्य दुखरग दुखरक मुप्पणि। हैय, परिहिस्सामि, पीहि-द्सम दशम वुज्ञांसग दुग्णुपान्य स्सामि, पेहेसामि, पिहिय-; स-दह् ( धातु ) दहह, इहह, डउमह, दुत्तिइव्सव दुन्नितिक्ष षाएइ, सथए, अमिश्वथए, आडा-**६०, समाद्द्याण,•डह०, श्रिड**ाश- वृषय द्विपद एमाण वुष्पञ्चिषुह्रग, ०मृहण दु प्रति धाई भात्री दा (भानु) दयाइ, देइ, दलइस्सामि, धारिण्॰ — दासामि, बाहामि, दल-, अदल-, बुब्भि व्याम धारिय भारिक भइण्ण-, आइयन्ति, आइए आइ दुरसक्तम दुरतिकम धाव् ( धातु ) सभावर् याबए, आइज्जर्माण, अगार्यमाण, दुरणुन्तर — धीर — -- भीण, आइष्ट्र-आइहिण्- / आ- दुरिम ---धुष, धुय धुव दत्ताय ), अणाईय, आयार्णज्ञ, दुराहियासमा दुरिधव सनीय घू (धानु)धुणाइ, घुणे, धूय-, भायाणीय, भाइनु, भायाए, भाय, दुलुभ दुर्लभ विद्वीणया, विध्य-, संविद्वाणिय उर्वाइयमाण, पाएजा, समाह्यन्ति, दुवालसम द्वादश दुहितृ ध्यर्-समायाए, समाय द्विह हिविध धृ (धादु) धारेजा, धारेलए, बि-दाढ दध्ट्र दुव्यस् दुवेमु(-मुनि) षारए दायाव — दुसंबोह दु मम्बोध र्घा ( ,, ) धोवेजा, धाय दारुण ---दृहुआं द्विधातस् ध्या ( ,, ) साइ, झायइ, निज्हा-दास --कृतरा (धानु) दृहजा, दृहजेजा, **₹**117 दासी — दूइव्यमाण, (हेनन्नगिम्हासु होसु, रिजइ दृहज्बद, दाहि वा पाएहि । न श दाह डाह -दाहिण दक्षिण रिजाइ दृहजाइ-व्याख्या ) दिडिमन्त् - द्रष्टिमन्त् नक्ष् (घानु) भागक्सेस्सामि, अण•, दूर विद्वीय द्धिक आणि ॰ ह्या (धातु) अद( इ)क्ख्, दिय द्विज दिहु, दुरिहु, दह, दहण, दिस्सई नगर मगिण नम दिया दिना दीसई, अहिस्समाण, उपदसेव्या दिख् (भातु) परिदेवमाण **मह**्न नृश्य विख्या दिव्य वेसिय देशिक

गन्दि —	निज्होसदत्तर्- निर्होषयित्	The same of the sa
नस् (धातु) नसमाण, अनमसा	भ क्षेत्रक स्थाप	पहट्टाण ( अप्प० ) प्रतिष्ठान,
स्थ भारतस्यासाम् उत्यक्तामा प	रि निर्तिय ( आनि ० ) निस्य ( अनि ०	( লয়॰ )
णमेखा, विपारिणामस्ति, विपा	ति <del>विकास किया</del>	
गामेन्ति, पणव	नि <b>दे</b> स । नदेश	पक्कस्य दश्रव्य वक्कस
नमस्यू (भादु) नमंचित्र	नियम —	पुष्स्वालण प्रकालन
मर —		पक्किण्- पक्षिन्
	नियष्ट् ( अनि० ) निवर्न ( अनि •	
गर्ग भरक	नियम —	प्रगटप प्रकल्प (सामाचारी ≕
मञ् (धातु) नस्तर्, नासः, र		आचार )
गस्तर,	नियाण निदान	प्राप्त प्रकाम
नद्व नस १ का कार्ड / कार्याक-स	निरय —	पगार प्रकार
<b>१ माद</b> ज्ञानि (ज्ञानिगुत्र≔मह		परगह प्रमह
भीर ) 	निरान्ध्रयनया निरातम्बनना	चन्न (धातु) पयह परिपचमाण
२ माद् शांति (ज्ञाति-वन)	निरुवद्वाण (निरुक्य)न	प्रित् •
नाग —	<b>निरा</b> ह निराध	पञ्चानम प्रत्यक्तिम
माण शत	निलार ननार	पश्चान्त्रण्- प्रत्याशन्
नाणवन्त्- शानवन्त	<b>निचार्</b> ण्— नियातेन	प्रचरहा पत्रान
नाणिण्- ज्ञानिन्	निवाय निवान	पटनम् वगम
नामि —	<b>निवेद्यण</b> ानवेशन	पञ्जबन्तियः हण्यं मन् (धानः)
नाम नामन्	निक्ताण ( ने० ) निर्वाण	पञ्चता पञ्चन ( शब्द, रूप, रस,
नामय नामक	निच्चेय निवद	गञ्ध, रूपका)
ी माय जानृ	<b>निम्मा</b> र निवार	धक्ण पहन
रे नाय ज्ञान	निम्मयस निधाम	पश्चिक्त प्रतिकृत
<b>नायपुत्त</b> ज्ञात्युत्र	<b>निस्मेम ( नी०</b> ) नि शेष	पाँच्छ ( पाइयक् ) प्रत्येक
नालीय नालिक	निस्सेस्यि निशेषिक	पानगह प्रान्धह
नास नाश	्निह ( अनि० ) निघ ( इन् धातु )	) ग्रान्यगाय श्राचन
<b>निकरण</b> (नो निकरणाए ति, ने	<sup>।</sup> <b>नी</b> (धानु) उवर्णाय मुक्रणाय	
निश्चम कर्तु समर्थः,-न्याख्या )	पाराणिक त्रमाण, विषादन्त, विषापन	
निकरणया निकरणना	<b>नीया</b> नीवा	पास्यक्क स्प्रध्य शहक
१ निकाय —	नोल —	पांडकेहा प्राप्तकवः ( लिख् घानु
र निकास दृष्टम्य नायू (धातु)	नीसंक नि शहक	पश्चिम्हणया प्रानपृहणना
निकेत (बनि॰) —	<b>नासिस</b> दृष्टव्य निस्सेस	
निकस्म निष्ठम	नुद (धातु) पणुष, विप्यणोक्षण	पद्मिण ध्याचान
नेगम —	विपु -	पदीयार प्रतःशाः
नेग्राम्थ निर्धन्य	नूम कर्म, माया ( अभिनृत अभि-	पहुंचा रुप्त्य ब्रन् (भागु)
नेचय —	सुक्येन कर्म साया वा )	प्रणाग पनक
नेखरा (झनि०) नित्यक (अनि०)	नेत्र, नेय नेत्र	पाँगय पण्य
नेखरा निर्जरा	नेदयाण निर्वाण	पींड्य पण्डत
नेज्ञार्ण्- निष्यायिन्	नो न	पन् ( धानु ) अद्दशएण्या, अणह-
		बाएमाण, भावविय, अप्यह्य, निव

पतलस-पौर ]	अकारादि-शब्दानुकमणिका	***
इसु, निवइय; पश्चित्रयमाण, सप	परिश्वा परिज्ञा	पाईण प्राचीन
यन्ति	परि <b>ञाण</b> परिज्ञान	पांड प्रादुस्
पतेलस ( पतेरस ) प्रत्रयोदश—	परिपाग ( पलि० ) परिपाक	पाडियक दप्रव्य पाडिक
पगथ परिषय का तेरसम वरिस	परिमंडल —	१ पाण पान
जेसि वरिसाण-प्रकर्षेण त्रयोदशन		रे पाण प्राण
वर्षम् स्याख्या)	परिमाक्त दृष्टव्य पतिमाकस	पाणिण्- प्रामिन्
पन्त पत्र	परियष्ट्रण परिवर्तन	पाभिष्य प्राभित्य (पाभिषति भप-
पात्तिय प्रतीन	परियंदण परिवन्दन	रस्मादुच्छिन्नमुद्यत्कम् ; व्याङ्या )
पश्चय प्रत्येक	परियाय पर्याय (आमण्यकाल)	१ पाय पात्र
पद् (धातु) आवज्जनित, आवा	परियाब पन्तिप	र पाय पाद
यए, परियावज्जनित, समावज्ञ,	परिवन्दण ( परिय० ) परिवन्दन	पायर् - प्रातर् ( बया प्रातराश )
अज्ञीनवन, पद्भवन, समुध्यक्तेन्ति,	परिस दृष्टव्य फरिस	पार — (यथा पारम, पारमामिन्,
समुपउने, निवजनइ, निवजनजना,	परिस्तव परिस्नव	पारगम )
पश्चित्रम्, बिग्यज्ञिवन्त्, सपन्न	चरिस्सह परीषद	पारुसिया पाइषता
पडिस्ता प्रदिशस्	परीसह "	पालय् (धातु) पालेमाण, अणु-
पन्त शन्त	पलाल — ( पनालपुत्र )	पालए, ॰पालय, पालिउजा,
पन्धा पन्धन् (पिधन् )	पलास पहास	•पा <del>क्षेत्र</del> जासि
पक्र प्राज्ञ	पिलिपाग      दृष्टच्य परिपाग	पास पाप
पन्ना प्रज्ञा	पलिबाहर ( ०हिर ) प्रनीप भाहरे	पासना पापक
पद्माण प्रज्ञान	चरण गकोचए देंनी भासाए-	पावाइय प्रावादिक
पञ्जाणभन्त्- प्रज्ञानवन्त्	•या <del>ङ</del> ्या	पाचाउय प्रावादुक
पर्भगुर प्रमङ्खर	पलिमांक्स ( परि० ) परिमोक्ष	ी पास्त पार्श
पभिष् प्रभृति	पिल्य कर्भ (पिलियहाण, पिलिय-	२ पास पाश
प्रमाद्या प्रमादिन्	<sup>प्</sup> यगन्य— <b>इ</b> त्यादि )	पासन परवक
प्रमाय प्रमाद	पंचच प्रवन्न	पासणिय प्राक्षिक
पमुद्ध भनुख	पवा प्रवा	पासिम दर्शनीय
पमोक्ख प्रमोक्ष	पश्चाय प्रवाद	पास्तिमन्त्- ( पस्त्रतीति पस्तिमं
१ पय ९६	पद्म (भादु) पासह, पासे, परम, पास,	<b>ब्या</b> ह्या )
२ पय प्रज	पासह, पासन्त्—, अपासन्त्—, <b>पस्स</b> -	पिच्छ, पिञ्छ पिच्छ
पथणु प्रननु	माण, पासमाण, पासिय, समगुर-	पिह् (धातु) पिहर
पयणुग प्रतन्तुह	स्सइ, न॰ पस्तर, स॰ पासह	पिद्व प्रष्ठ
पया प्रजा	पसु ( अप० ) यशु ( अर० )	पिहि एष्टि
पर — (परेण पर)	पसुरा ( अप० ) पशुक्र ( अप० )	विषय
परम —	पह वध	पिण्डोलग पिण्डोलक
परिगाह ( अप० ) वरिमह (अप०)	पहु प्रभु	पित्र —
परिग्गहावन्त् परिग्रहवन्त्	पहेण ( प्रहेणक )	पिय ( अप्रिक ) विय ( अप्रिक )
परिणिख्याण ( अप० ) परिनिर्वाण	पा (धातु) आपिडत्य, अपिबित्या,	पियर- पित
( भप• )	पाउ, पायए, अपिवित्ता	परिष् (भाद्र ) पितृष्, जाबीलए,

पर्वीसए, निप्पीत्स्य	परुष	अवयुज्ज्ञन्ति, <b>ओयुज्ज्ञ</b> माण; <b>पयुद्ध</b> ,
पीढ पीठ	फरुसया-०सिया परवता	पढिबुद्ध, सुपडिबुद्ध, पडिबुज्झ,
<del>дев</del> —	ੀ फਲ —	सबुज्जमाणा, अभिसबुद्ध
पुञ्छण प्रोञ्छन	<b>े फ</b> ल फलक	बुस्तिमन्त <b>यु</b> बी हजमी-व्यास्या
पुत्र —	फल्य "	वेशिह नोभि
पुढवी प्रथिनी	फल्स फलस्ब	म् (धातु) वेभि, बुश्त, मुस्य,
पुढ़ो पृषक्	<b>फारुसिय।</b> पाइव ग	ब्या
बुण पुनर्	फास सर्भ	
चुणर् ,,	फुसिय १७१	<b>अर्</b> णी भगिनी
वेजा ''		भगवन्त् —
चुच्या पुष्य	षज्ञा वास्त्रनस्	भज् (धानु) विसयन्ति, विभए,
पुरत पुत्र	बन्ध् (बादु) बद्ध	<b>बिम</b> ल
युरक्षो पुरतस्	मन्ध —	<b>भजा</b> भार्या
दुरकार पुरस्कार	बन्धण वस्त्रन	भंजन मजह (मू लि मूनी,
<b>पुरस्थिम</b> पुरस्तिम	बेभ ब्रह्मन	तीए जाया भवता, भवता पृक्षा )
दुरा —	<b>धंभवन्त्</b> शहा∗न्त्	भण ( घातु ) विक्रमाणी
3`' युराण —	<b>4</b> ee →	भत्त भक्त
उ <sup>्त</sup> दुरिस पुरुष	बलि —	भमुद्दा भुवुका
पुरे पुरस् युरस्य उरम्	विद्य	भय —
	बहिया गणात्	ਮਥ
पुलाग पुलाह बुह्य पूर्व	महिरस विधर व	भाग
	बहु —	भायर् अन्त
<b>વુલ્લે</b> વર્ષ	षदुग बहुक	भाव
पुर्क्वि ;, दुष् (षातु) वेखिल, वेखेलित,		भाष् ( धार् ) भाषामी, भाषह, भा-
पुष् (पाद्ध) पाकामा, पाकाम्त, पोसेका, पोसिय	गुल —	सन्ति, भासिय, अनिमासे, अभि-
	<b>यह</b> सी बहुशस्	मासिषु
पूद पृति		and the contract of the contra
पूर्यणा पूजन	बाध (धानु) वज्यसाण, उच्चा-	भि उर,-भे <b>०</b> भिदुर
पृश् (भातु) पुर्विछ पु, पुरिछ-		भिक्खायरिया भिक्षावर्ग
स्मामो, पुष्टु, भपुष्ठ, पश्चिपु च्छमाण	बाल —	भिष्मवु भिक्ष
[ (बाद्र) पुण्य, पूरइसए, पूरेबसए,		भियन्युणी निश्चणी
पहिचुण्ण, सपुण्ण	षाहा बह	માિલ —
विष प्रेत्य	पार्दि अल्बम्	निद्(भाद्व) निज्यह अन्ने
जि प्रेमस्	षाहिर,-०इर शहिर	भी —
सिल वेशन	षाहिरम बाग्र	भीम —
हा नेका (केंक्ष भादु)	षाहु	
	बिर्देय, बी० दिर्ताय	मीय भीत
पेरिसी पौर्वा	१ बीय "	भुज् ( धानु ) भुजे, भुजह, भुजित्वा,
	२ वीय बीज	भुवत, भुविय, बनोबा, भोत्तए
तरिस सर्थ	. 464 313	3 4 4 4

भू (धादु) नित, भवे, भविस्सामि, भविस्सा-मो, होइ ( अवड् ), होन्ति, हाउ महविया मार्दवता भूय, पभूय, सभवन्त, अस्. स-भ्य, अभिसभ्य भूमि भूय भूत भेउर, भि० भिदुर भेत्तर् भेत्र भेय भेर भेरच नेरव भा भास भारण भोजिन भोग भोम भाग भोयण भोजन भ्रंच् (धानु) सह माइ मिनि महमन्त्र मनियनम् मउय मृदुक **संकड** सर्कटक मंस मान भसु इमध् मक्काद्रमा मर्केटक **सरग** मार्ग मिष्य मध्ये मच्यु मृखु माज्ञा सध्य मजिल्लम मध्यम मद्भिया मृतिका मर्डव मण मनस् मणस मनस् मणि भणुस ( •स्स ) मतुप ( •ध्य ) मत्ता मात्रा समू ( भाद ) पमत्यह, पमन्यह

भवः ( होइ ), भव- मद् (धातु) मञ्जेजा,पमनेजा, पमस, मीसी भिन्नी अध्यमत अहें सि, भूग, अणिभूग, अभि- सन (धातु) मन्नसि, मन्नइ, मन्नमाण, मय, दुम्मय, मणुया, मला, मन्ता, संत्रय (धातु) निमन्तेण्या मन्थ मन्द — समाइय भगायित ममाय् (धातु ) ममायमाण, अममा- मुसिय मुक्तिक यमाण, अममायमीण ममाग (मामग) ममक मरण — मसग मशक महन्त्र ~ महु मधु महुर मधुर मा --मार्ण्- माथिन् माइल (अभा॰),, (अमा॰) आण मान भाजण मानन ( यथा वन्दन, मानन पुजन ) माणव मानव माणुस्स मानुष्य माभग मामक (मदीय) मायर्-티킨 १ माया ९ माया नाता ३ माया मार मारुय मार्ग मास माहण (बंभण, बंम्हण) ब्रह्मिण भिजा मन्त्रा मो।सिय मै।वितक मित्त ाभेत्र मोयण भोचन भिद्धं मिथुस् मोड --मिद् भिषस्

मुच् (धातु ) शुच्बइ, मुक्क, मुत्तः उम्भुच्च, मुख, पमुद्धासि, पमुद्रह, परोत्ररुधि, विष्यप्तवक, पढिसीयए, ावे**मुक्क**, विमुत्त मुहि (मुंठि ) मुहि माण मुनि मुण्ड --म्सि मुक्ति मुसिए।- मूत्रिन् मुन् (धातु ) सुय, सुणिया, सम्मुय मुद्द् ,, मुज्बद्द, मृद्द, सम्मृद मृह मुख मुद्रुत्त मुह्रेन महत्ताग मुहतेक **सृद्**ण्- सुविन् स्य मूक (मूय, मूइ) मूयस मूहत मृद्धे (धातु) मुच्छइ, मुच्छमाण। अमुरिछय मुल सू सियारी मूबिकारी (मार्जारी) मृ ( बातु ) मुयब ( मृताबी, मृता विनष्ट अर्चा (नेजस्) कपायकपा येथां ते मृतार्चा -व्याह्या) सपमा(ए मृज् ,, सपालेमकमाणः पमकाए, पम-जिजा, पमाञ्जया, पमक्रिजय **मृष्** (बातु) अस्तुमातः विष्यर सम**इ**• सुसद, • मसह, • मुसद्द, मुसन्ती मेहाचिन् मेबाबिन् मेहिशिय भेहिनिक महिण- भेहिन् मोक्स मोस मोग भौन

to the second se		
म्ला ( धातु ) मिकाइ	राय रात्र	पाडिकोहिता, पडिलेहिय, सुपाडिले-
१य च	रायंसिण्-राजीक्षेत्	हिया
२ य ज (यथा अण्डय, र्डाव्सय,	रायण्-राजन्	लिए ,, किपाइ, ओलिपेड्जा,
जराउय, पोय <b>य, रसय</b> , ससेय <b>य</b>	रायहाणी राजधानी	उवकियोजनासि, वर्लिपेव, लिपेडजा
हरगार्द ।	頭( 입(C) )(3개통, (1위원, 전기식)	(31), 52-4-401
यत् ( धातु ) जयाहि, जयमाण	शियन्ते, शियन्त्-, शह था, शियमाण	लुक्सा रहा
यम् ,, जय (यतेत्), आयग,	रिच् (धातु ) रिक्क, अद्दरित, रि-	लुआ ( धातु ) लुन्दिष्ठ, छान्दिय, सङ्क-
आयतर, नियच्छन्ति, सजमा,	क्कास ( सक्तवान् )	<b>बमा</b> ण
सजय, असजय॰	रीया ईया	ळुच् ,, लुध्यह, भाकुपह, बिळपह
१ या च	रुक्त रुध	विद्यपन्ति
२ था (धाद्वः) जोन्त, दुरजाय,	हद् ( धातु ) ६यन्ति, रोयन्ति	लुप <b>रत्तर् ।</b> तुम्पथितृ लुपित्तर )
जावए, जाबहत्य, निज्जाई, नियाइ	रुध् ,, निरुद्	
	रुञ् ,, आर्धियाण	लुस् (धातु ) इसिन्नु, (पिद्देन्ति,
जाइता	रुद्ध् ,, अभिरुका, आरुका,	। शहस्य । च्रास्य
युज् ,, अभिजुजियाण, •जाजिया,	समाइहां न्त	न्दूसग द्वक
बिप्पडजनित	रुद्ध (६६ वीजजन्मनि )	त्रुस्थारा त्र्यमक
युप् ,, जुग्माहि	रूपय् " पक्ष्वेत्री, पक्ष्वेद्द, पक्ष्वेत्रितु	त्दू (सण्-द् पन्
<b>रह ( भर•</b> ) रति ( अर• )	इव स्व	त्रृह ( छम्ब ) स्थ
	हविण् ( अड॰ ) हिन् ( अह० )	लहु, ललु नर्
रक्क (भारत ) सरस्य सम्बद्धाः व्यक्ति	रोग —	लेस्सा तेष्मा
रक्ष् (धातु ) सारक्षमाण, ॰मीण	लड्क (बादु) कडजामी, सम्जमाण	लोर्य लाकिक
€€ ; €53€, ₹€±1, ₹€1,	लिहि यदि	लोग कोक
आरम्, विरञ्जल, विरम	लिश्च लिख	स्रोच् ( बादु ) भानोएइ, आने। उन
र्षण अरम्य		लोभ —
इस् (धानु ) आरमे, आरममाण,	लभू ,, डम्ब, नमन्ति, सद्द,	लीव कोप
वसाण, जणारह, वसार (१) सह	अञ्चल क्या क्या व्यक्ति	लोहिय लाहिन
* ( * )	अलद्भ, •द्भग, स॰दु, सभिय उबलब्स, पहलब्स, पिबकाभिय	च इक एक वा
र (र) मन्त्र, र (र) ममाण,	उन्तरका, पहरूका, पाइकारक	सर्वे आच
भसमारका, वरना, समारमायह, व्योजना	लड्य (बादु) अवत्वर, अवत्वि-	वओ बनस
	याग	वक्तस, ए॰ निरम्ननधान्योदनम्,
रम् ,, रमइ, रमन्ति, हा अस्य	लवण —	पुराननसक्तुविण्डम् े बहुदिवसः
डबरय, अणुबरय, विश्मेण्डा, विरय,	-	
भविरम	लहुग लबुह	मञ्जनेतरस्याप्यममण्डकम् -व्यादयः
रय रजम्	लाप्रव —	र्थक वक
रस —	स्रात्रविया सायरता -	बच्च ( रातु ) बुल, बलए, बाइब,
रसण रसन	ন্তার বারা	प <b>नुच्यह</b>
राष्ट्र रात्रि	ठाला	श्रम् व्रय, बाण्य
राष्ट्रन्दिय राजिदिव	लिख् ( भार ) पवि नहन्ति, पविलहे,	
राम —	पांडिलेस्, सुन्दिकेदिया पविक्रेसाए,	

वहुम्या वस्मैक	२ आहा (भादु) प्रवायन्त	वित्त —
बहुमध्या वर्शन्≃मार्ग	३ खा (बातु ) उदायन्ति, उदवए,	
बड्रमच व्हमस्य	उ <b>र्</b> वेयम्	१ चिद् ( धातु ) बिइला, बिइलार्ण,
चडुमरा, ०डू०,० शर्मक	वार्ण बादिन	बेण्ड, बेएजजा, वेयण, पवेएन्ति,
धणस्सद् बनस्पति	बाड बाबु	ण्वेयन्ति पवेयए, पवेशस्तामि,
विषया वर्ष	श्वागरण व्यक्तिए	पवेयहस्सामि, पवह्य, पहिवयमाण,
बरच गड	षाम	विष्यविषेषु, पश्चिमवेयह, प॰ वेदइ,
ब्रह्मरा वस्त्रक	१ बाय बात	प॰ वेएड प॰ वेय (य) नित
चत्यु गस्तु	र बाय नार	२ विद् ( धातु \ बिज्जह, बिज्जए,
वद ( भाद्र ) वयन्ति, वयाची, बद	धायस —	निव्वित्रजङ्ग, निव्वित्रज्ञ, निव्विद,
स्थामि, वयस्य, वयमाण, अनवय	द्याया ( गाच् )	निव्यिण्य
शण, बहत्ता, अणुवयमाण, ॰मीण,	बाला (चर्मरी)	विजिला विदिश्
परिषयन्ति, ०४एउआ, पंषयमाण,		विद्वाय (धातु) विद्यायमाण,
॰ मीण	२ वास —	(विद्वासी वयमित्येवमान्यान मन्य-
वर्ष ,, पहिन्त, बहेन्तिः अभि-	९ वास्त्रमः वर्षक,	माना — ध्यारूय')
निव्यद्वेत्रज्ञा, निव्यद्वद्	<sup>२</sup> वासग नागक	विद्याण विज्ञान
<b>धम्</b> ,, बन्ता	१ वि अपि	<b>विञ्चयर्-</b> बिञ्चातृ
वसण नमन	२ वि विद	बिन्तु विश
१ घय वगस्	विश्वगिच्छा, ॰ गिच्छा विविक्तिसा	विष् (धानु ) परिवेषमाण, पवेवन्ति
२ घ्य वन	विश्मिक्स व्यतिमिश्र	विपाम्सण्-( विदार्शेन् )
१ स्थण वदन	विद विदु	चिप्परिणाम विपरिणाम
खयण वचन	विभावाय व्यवपाद, व्यापात; व्य-	
थयस वनम्	तिपान	विषिय विभिय
वसहार व्यवहार	विक्रय विकय	विमोक्खण विमोधण
वस ( धातु ) वसे, वसद्द, विमना	विश्वाह विश्वह	विमाह विमोक्ष
	विच् (धातु) विगिचइ, विगिच-	
ज्ञमि, अदियममाण, अणिह		े वियड विकृत
याधेमाण, आह्यासिय, अहिया		वियन्त-कारग व्यन्तिकारक
	विजय —	वियाघाय ्रव्याघत
आवसन्त, परिवृत्तिय, <b>स्वसङ्</b> .	विज्ञा (या) पंग विज्ञानक	विगर विरित
इस्त वश	विजंद विदन्	विराग —
ासा —	विज्ञा विद्या	विरुव विरूप
इस्तु (वसु द्रव्यम् )	विणइण्-विनयित्	विलुपयिसर् } विल्लम्यित्
षसुभन्त् —	विणय बिनय	विल्याप तर्
<b>बह् (</b> धादु ) वज्ज्ञमाणः परिव	- विणा विना	विवाय विवाद
बित्तए	वितण्ड —	विवेग विवेग
वह वध	वितद्द वितर्द	विञ् (धातु) पाविद्वयर (ग <b>)</b> ,,
<b>ी बाब</b> वा (विकल्पार्थक)	चितद वितय	निविद्व, विनिविद्व, पविसए, पविसि-

स्पामी,पित्स,पवेक्षिया,अगुपविश्वितः व वेर वेषय वेपक विसंहण विश्रम्भण ब्यथ् ( भातु ) पव्यक्तिय विसय विषय ड्याध् ,, समिद्ध, बहिय विसाण विषाण व्यक्त ,, परिव्ययन्ति , परिव्यए, विसोग विशोक विसोसिया विसेग्निधका परिष्यएजासि पञ्चहय विस्स नणया विश्वमनणना रुली ,, महीण, अलीण विस्तेणी विश्रवणी शंम् ( धातु ) पससिय विह विक **शक्,**, सक्लामी, सक्क, सक्का विद्वार — इात् ,, आसाएजा, (सस्कृत-आ-जिहि विधि शानयम् ) अणामायमाण, ॰मीण विहारिण- विहारिन् **१ इाम्** ,, सन्त, सनिय, समेमाण विहिसा २ **शम्** ,, सुनिसन्न (स॰ सुनि-विदिसग विदिसक निसम्भ, निसामिया, প্লান্ন ) चीरमिस्स व्यतिमिश्र निसामेला बीर -शिक्ष् ्र, सिक्लेंग्जा, सुविक्लेंग्जा घीराय (धातु) कीरायमाण (भ-समिक्ल बीरा वीग-भविता ) द्विद्य ,, विपनित्र परिसिद्द, मु-चीरिय वीर्थ बिग्सिट चाहि बाधि शी ,, सर् बुक्कम व्युक्तम इन्द्र ,, सोयइ, सोएउजा, बांयए, बुद्धि बद्धि अणुमायन्ति खु (घानु) पाउलिस्मामि, पाउड, **रा**ध्य ,, सद्व, सुविसुद्व निवरेड, निव्युड, अभिनिव्युड, श्रद्धाः " धर्ह पोरिनेञ्च सम्बद्ध श्री ,, सिय अणुनिय, अणुन्सिया, धृज् ., दज्जजा, वर्णजन्त, वजा, अणुन्यिन, समुह्यमामि, •णामि, परिकला, पन्तिज्ञयाण, सम्बन्धियासि, ०णार्स, ०णाइ, **वृत्** "भददन १)६०, वन (हे) उत्र , निस्मिय ।तउद्दर, तिउद्दर, तुद्दे आउद्द ु,, सुणइ, सुणइ, स्लेह सुण-बह, नियह नेत्र, नियहमाण, अभिनिब्द-माण, स्य, द्रम्य, मृणिया मात्रा, त्तेज्जा, विभिष्टमाण अणुपरियष्ट्रहरू, सस्मूम, मुस्सूममाण • यहमाण , त्रयम्ण , वि उद्दाण ,वि यहमा सब्देजन', सबद्दना, मबद्दना प्यप्क ,, अवसक्केडना **ष्ट्रप**्र, बट्टूह, बट्टेह, अभिमनुट्ट ९ स. से. सो 🚇 (तत्र सर्वनाम. वेय वद पुळिङ्ग-प्रथमकवचन ) वेयण वेदन २ स्म सहायक वेयवत्- वेदवन्त्-रेस स्व वेयावडिय वयापृत्य सई पट्ट

संबद्धर धंनत्वर संसप्पग संबर्ध संसय धंघय ससार संसेय वंशेर संसोहण प्रशोधन संहारण — साविक स्रक्ति संकल्प सक्रथ संक्रमण स्क्रमण संखाडि सस्कृति संग — संगध सप्रन्थ संगाम समाम संघाडी खघाटी संघाय संघात सच्च मध्य सञ्ज ( धानु ) ध्रुजेरजा, यत्त सजाग मयोग सङ्खिण्- अहिन् सत्त सत्त्व सत्ता — स्वरित शक्ति १स्त्रय शब्र व स्मरधा शास्त्र सम्बर्- शास्तृ स्तर् (बातु) यम्न, अबर्धायमाण, भाधान निष्राजना, समास्त्रज्ञ, निश्रण, विप्पश्रयए, विद्वीयमाण, विश्वण सप्ट श॰व सदा श्रदा महिं स्थीम क्तन ( धानु ) अपण्डमधिय, पण्डाब-सिथ, सपज्जबसाण **संताणग स**न्तानक संति गन्ति

संतेगाय सन्धेर-संधर सत्तर संघष सस्तव संयारग यस्तारक संधय बस्तत संघण सन्वान संधि — समा बन्ता मंत्रिचय — मेनियेस सनिवेश संनिद्धाण मनिधान संनिष्टि मीनिषि स्विष्ण्- सर्विन् सबल्य शबल्य सभा -सम --समंजस — समण श्रमण समगुष्त समनुश समय — समया सगता समायाण ग्रमादान समायार समाचार समारंभ --समाहि समाधि समियं, या सम्यक् समुद्रार्ण्- समुखायिन समुप्पाय समुखाः सम्मुस्सय बमुग्छय संपसारग सप्रसारक संपादम सपानिम सफास सम्पर्श संबाह सम्बाध संबाहण सम्बाधन सम्मद सम्मति सम्मद्या सम्मतिना सम्मं सम्यक सम्मल सम्यक्त सम्मुद्द धम्मुति

सम्मुद्रया सम्मुतिता सम्मुख्छिम समृद्धिम १ सायः शय १ सय स्वक १ सयण शयन ९ सम्यण स्वजन सर्य स्वयम् स्ययं सतनम सया धरा सर स्मर १ सरण शरण २ स्वरण स्मरण ९ सरणया शरणता २ स्वरणया स्मरणना सरीर शरीर सर्वारमा शरीरक साह्य शस्य सम्बर्ग अवण सञ्च सर्व सञ्बद्धी सर्वतस् स्वरुवन्त सर्वस्य सब्बन्ध सर्वत्र स्परवया सर्वदा सब्बना सर्वशम् स्टबावन्त्-सर्वावन्त् सम्सय न्युव्य सासय सह (धानु) सहह, सहए १ सह -२ सह । स्वरू ( युद्ध सम्मइ-या=स्वक्सन्मन्या ) सहसाकारय (धादु) बहुब कारेड सहि सिय साइण-गायिन् साइम स्वादिम सागारिय बागारिक साड शाट साध्य (धातु) साहेद, साहदू, श्राहिस्सामा, साहिय

सामगिय सामग्य सामस स्यामस्य सामिण्- स्वाधिन् साय बार्य १सार — २ सार सार स्तारम स्मारक साला शल सासय शाव्यम साहम्मिय साधार्मे€ साहारण साधारण साहु साबु सिंग गृङ्ग सिच् (धानु) सविश्वमाण, स घ०, सामिधियाण सिदिल शिथिक व्यापाण सान सिद्धि -सिध् (धातु) निसिद्धा, पिरबेहिय स्तिर शिरस् सिलियरण्- श्रीपदिन् (श्रीपद पादादो काठिन्यम्-स्याक्ष्या ) सिलाग न्हों स्विस्तिर शिशिर सिस्स शिष्य सीय शीव सील शील सीलमत शीवदन्त सीच् (धातु) धिविस्यामि, मीवि• सीस शीर्प स् सुकर — सुकरण — सुक्त शुष्क स्रकिल गुरू सुद्द् युद्ध सुणग शुनक सुणिम ...

सुरुहा स्त्रपा सुत्त सूत्र सुद्ध श्रम स्तुप् (भाद्र) दुत्त सुरुम ग्राप्त सुब्भि दुरमि १ सुय भूत ९ सूय स्त सराध - गम्ध सुवसु — सुस्वय पुत्रत सुसाण स्मशान सुद्ध पुख सुद्रम स्क्म सूद ग्रुवि सूद्य सूप्य, अवदा सृपिक साणिय स्तेक सूर श्रूर 😝 ( भान ) पद्मारए, पद्मारेमाणे, पश्चारिय, पश्चरित्तु, सपसारए. अणुसभरह सुन ,, बोमिरे, बेग्मह, विश्रीसण्ड, •सिउज,•सेजः, दोस्डज, भा<sup>श्</sup>मट्ट सेजा शय्या सेय भगम् हमा सेवू ( घानु ) सेवइ, • ए, सेवन्नि, हुणु सेवेज्जा, मेबिन्या, सेविस, सेविसा, आमवह, • ए, आसंवित्रा, परि-स्रेवे, पडिमेबमाण सेस शेष सोडि (बिदि) सोणि (णी) य शोणिन सोत्त श्रीत्र १ सोय शौब रसोय श्रात्र हरय हट रे सोय स्नानम् सोयविया शीववता ९ हच्च सोलस बेहरा २ हरुखा हब्य

सोचारा स्वपाक १ हस्स ६वं सोडि शोषि १ इस्स, ४० चुल स्कारः ( धातु ) सलयिसु स्तन् ,, धणति स्तभ् ,, ओहंभियाए, ओहभिया स्तु ,, सथरए, सयरेज्जा, स्रय-रित्ता स्या , बिहर, बिहे, बिहेण्या, हालिह हारिह ठाएण्डा, चिहन्-, अचिहन, हिय, **१ हास हर्ष** ठावए, उद्दिय, अणुद्धिय, उद्दाए, उद्दाय, २ हास्य — हास्य समुद्दिय, समुद्दाय उबद्दिय, अणुब , हि -पश्ट्विरेज्जा, पश्ट्विरेत्ता, विपारिचिद्रह, हिंम्म (धातु ) हिंसह, हिंमन्ति, विद्विय, परिविचिद्वद्व इपंदु ,, विष्फन्दशाण स्पृश् ,, फुधन्ति, कासए, प्रहुबन्त्-, हिस्सा ---स्पृद्व , पीइए स्फुट् विफुबमाण ,, स (म) रिन, अणुस- दियय हदय सरङ स्त्रु ,, बीसबन्त स्वाद् ,, साइग्जर, सार्विजस्सामि, हिर्रा न्ही सःय, असाय, अस्याय ŧ हेता हल ह नु हण्य हन्द इत्य इस्त हन् (भार ) हणात, हणिया, हणे, हण, हण्ह, हणन--, इतव्य, हय, (ह ओवह्य), हम्मह, हम्रह, आहत् चबहय, निहणि=ब्र,निहा<sup>™</sup>,सु,अनिह-म्समाग्. इंतर्- इन् हरिय हाँरन अवीव

हा ( धातु ) जहार, जहति, जहारि, हीण, जहिला, बिज ०, हिच्या; परिहा-यमाण, अप-, अपरिशीण, पश्चाय, बिप्पजढ, बिजहित्ता, वियहित हिंसिस्सन्ति, हिसिसु, अहिममाणः विहिंसह, विद्विसन्ति, अविद्विसमाण हिमरा हिमक हिमबाय हिमपात हिय तर हिरण्या हिरण्य हिरिण्- (न्हें।मन्द्र) हु खट इरत्या हरस्तात हरमा हस्य हु (धानु) अभिद्रह, अवहरान्ति. **आहरे, आहड,** आहर्यु, आहारमाण, उदाहरन्ति, उदाहर, परिद्वरन्ति परिद्वरज्ञा, परिद्वरन्त बिंहरे, विहरित्या विहरिष्, निह-रत्न, विद्रमाण, बिष्टरजा **इ.**ए (बानु) हारे**से** हेउ हेन् **हेमेन** हैमन हाहु हु-ओड़ बुतु (धानु ) निष्द्वयद्द, निष्द्ववेत्रजा ह्री ,, आंदेरीमाण

# कतिपया विशिष्टाः पाठ-भेदाः।

### **──→⋺→⋺⋒⋲**⋲⋲←

ā	\$		१ भाउधतंष, आमुसतेष, भावधतंष	
-		25	१० अणुसचरइ, स्थाने भणुससरइ	
			१६ सन्धेइ स्थाने सन्धारह	
		н	१७ मोयनाए स्थाने भोयनाए	
Ţ	ર	ų.	२४ नियाण स्थाने निथाय, निकाय	
•			२६. विश्वहिषु विसोत्तिय स्थाने विज्ञहिता	
			( वियद्विय, वर ) पुन्वस्रजाग	
Ţ.	3	ġ	इ.स.च नेस्य स्थाने पास नेस्य	
•			ु पासमाणे <b>कवाह स्थाने</b> पासमाणो	
			पांचमाइ, पुणमाणे बहाइ स्थाने सुण-	
			माणो स्रीणभाइ	
g.	8	ψ	२३ एवस्स स्थाने तयस्य, एगस्य,	
•		*2	२७ इह स्थाने इति	
g.	4	,,	२०. जिले स्थाने विद्वे	
-		3,7	२१ सत्थे स्थाने सते	
		,,	२२. माणवाण <b>स्थाने असम</b> जयाण	
		3)	२३ परिमाणेहि स्थाने पमाणेहि	
ā	₹.	Ů,	१० जाबसोशापरिकाणेहि अपरिहायमाणेहि	
			स्थाने जाव सेल्पनाणा अपरिर्दाणा	
		, .	१५ कि खित् वि एमे न।स्ति	
		30	२३ विण्डल स्थान विणा वि	
		1,	२६. क्रचित् णाइवले अग्ने समणवले	
			अधिकपाठ	
		2)	२७. दण्ड-समायाण स्थाने दण्ड समारअह,	
			भना ६०४-समायाण संपद्दाए, इति श्रा	
		31	३२. से असर इत्यादि पाठस्थाने	
			'एममेगे सञ्ज्ञानि अईयदाए अस्य-	
			उषागोए असइ नीया-गोए, इण्डगहु-	
			बाए नो डींणे नो अहरिते.' एतास्थी	
			माराजेनीय पाठ ।	

पू. ७, ऐ. २. इ.चिस् बाय मास्ति । तथैव 'प्रि-

देण बाह्य इक्ट्रक्रोगप्रहेबएचं पुनि

ताव जीवाभिगमे कायम्बे जास इन्छि-सायासाय वियाणिसा याणि स्छिय हिसोवरई कायव्या वनादशो नागार्जुनीयो पि पाउभेद । ,, १५ वियाजया स्थाने वियायया पु. ८. प १४ थीरे पससिए स्थाने भीरे तथा नमसिओ .. १६ पडिसेहिओ स्थाने पडिलामिओ. ,, १८ •क्वेहि सत्येत्हं इत्यादि पाठस्थाने सस्य है विकल-कवाण अहाए, त-जहा एय पाइता ., २३ अय सन्धीति - स्थाने अय सन्धि पु ९ पं ६. अमहा ण पासए स्थाने अस्परेण वासएव ,, २५. से त अग्रह अमह बेमि **स्थाने से** एवमायाणह ज बेमि. ग १०. पं ९ दिह-अए स्थाने दिह-पहे ,, १४ तम्हा बीरे न रव्य**६ स्थाने तम्हारेप** विरज्जए ,, २१ कचित्र एवं भीरे पर्सविए नास्ति कचित् मुक्सु कीरे प॰ पू. ११ एं. २ आबह अणु रुखाने दुक्खाबहमेव ,, ७ आयब नाणव स्थाने आयबी नाणबी. .. ११ माराभिमकी स्थाने मारावसकी, ,, २५ कम्म-मृत व ज स्थाने कम्ममाहुय अः .. २९. महम स्थाने मेहावी प. १२. पं. १३. अगा च इत्यादि स्थाने क्रचित् मुखे च अगं व बिएस बीरे, इति तथैय

जुने व अर्थ व विएत् वीरे, बन्सासर्

वेह विमोक्खण च शति नागार्जु-नीय पाठभेद । ,, २६ नाणुजाणए अभे कचित् छणन्त नाणु-

मोएय अधिक पाठ । ,, ३०. निसण्णो पांबेहिं कम्मेहिं स्थाने तेसु

पृ. १३ पं. १ गामी स्थाने गाम

,, १३ भीरे स्थाने भीरे तथा

कम्भेस पाव

विषय पश्चगम्मि वि द्विहम्मि तिय-निय

भावओ सुद्रु जाणिला

से न लिप्पइ दोसु वि

(१ विस्यम्मि पञ्चगम्मि इखपि प्रसम्तरे)

इत्येवंरूपो नागार्जुनीय पाठभेद ।

**,, १९ अवरेण पुन्न न सरीन्त एग इत्यादि पक्तिस्थाने** अवरेण पुन्त निष्ट से भईय

किह आगामेस्स न सरन्ति एंगे, भारतिन एंगे इह माणवा उ (ओ)

जह से अईय तह आगमिस्स । एकेस्पा पंक्तय ।

,, २३ अद स्थाने अत्य, अह वा पाठ । पृ १४. पं २ दुक्त-मत्ताए स्थाने दुक्समायाए. धम्ममायाय इति वा पाठ ।

> , ६. चूर्णिवुस्तके उत्तरम जाव सम्बन्धि पाठो नोपळभ्यते ।

,, १९ क्वित् मार स्थाने मरण कवित्र मार व मरण व उमयमपि।

वृ. १५. एं १ तो लोग॰ एतडाक्यस्थाने नो य लोगमण वरे

, ४ अयमाने वीर स्थान जयाहि एव

अवसार विरुद्धान निराह त्रियेषं नाराार्जुनीयः पाठभेद — आधाइ सम्म खल से जीवाण, न-जहा समार-पश्चिमाण स्वाप् अत्रक्षा मणुस मबरमाण आरम्म-विणईण दुक्खुल्वा मुहेसाणाण ध्रम-स्वण-मेबस्गाण नितिसत्त-संख्याण मु-स्युसमाणाण पश्चिपुच्छमाणाणे विद्राण-पत्ताणं,

,, १५ पुढो पुढो इत्यादि पंकिस्थाने पता-हृदां पाठान्तरम्—एत्य मोहे पुणो पुणो, इहमेगेश्व तत्य-तत्य स्थवो भवइ, अहोववाइए फासे पंडिसवेययन्ति, वित्त कुरेहिं कम्मोहि चित्त परिविचिहर, अवित्त कुरेहिं कम्मोहि नो वित्त परिवि चिहर

" २४ ने एव वयासि **स्थाने** एवमाइक्खन्ति.

,, २५ च्र**णिपुस्तके अ**णायश्यिवयणमेय नास्ति

,, ३० पानाउया स्थाने चूर्णिपुस्तंक समया साहणा

पृ १७ प १ तमसि स्थाने त अस्स

**९ कम्मु**णा सकल **स्थाने** रम्माण सफलस

, १५ आवन्ती इत्यादियास्यस्थाने नागा-र्जुनीयमेतादशं पाठान्तरम्— जावन्ति केइ लेग् उक्काय-वह समार-मन्ति भट्टाए भगद्वाए वा

,, २१ मरणाड ए**६ स्थाने** मरणाबुधेह

., २५ कट्टु एवमवयाणको इत्यादि पेकिन स्थाने नागार्जुनीयपाठभेदी यथा-त्रे खद्ध विष्ठए धवह, धेविका वा नालो-एइ परेण पुट्टा निण्हवह, अहवा न पर मएण वा दोषण पाविद्वयग्रण वा दोषण उविभिषेकनः

,, २९, फासे स्थान मोहे; कृचित् पुणी सम्रे ससय परिजाणओं विद्याप !

पु १८ पं १ पत्रमाणे स्थाने तथ्यमाण

,, १६ छन्द **इइ** माणवा **स्थाने छन्दाणं इइ** म.णवाण

"२६ से सुप्पडि• **पतत्यंक्तिस्थाने से मुर्य** अणुर्विचित्तिय न**वा** 

,, ३१ अ-पमन परिवाए स्थाने चूर्णिपुस्तके , अपमाय स्थिकवज्जा

,, ३२ अणुबाकेण्यासि स्थाने अणुपानेण्यासि.

पृ १९ पं ८ विया स्थारे चेव, अमेसिए स्थाने अगुस्सिलि, अगुस्सिला.

> ,, १३. छडा॰ पतत्यंकिस्थाने छदारिय व हुइ.स.

,, १६. भए स्थाने पहे. पु. २१. एं. २६. एत्य विरमेजन वेयवी स्थाने विवेग किटेड वेयवी.

,, २७ विणश्तु स्थाने विणएता.

., २९. वडुमग स्थाने वहमग

षू. २२, पं १४ अणेग-रूवेदि कुलेदि जाया स्थाने अणेगओ तेसु कुलेसु

,, १५ इवेडि बत्ता स्थाने इवेसु गिद्धा

पू २३ पं. २, पकुल्बः स्थाने पगरभइ ,, ७. ध्रुवनाव प॰ एतत्पांक्तिस्थाने धुन,

पुर इति वा पाठ । तथैव धूरो-वाय पवेयहस्थामि इति नागार्जुनीय-मपि पाडान्तरम्।

,, १७. वहत्ता पुश्च सजाग स्थाने चूर्णिपुस्तके जहिला पुरुवमाययण

., २६ अहेगे धम्ममायाए स्थाने सहिए धम्म-मायाय

" २८ गेहि स्थान गत्थ, गिडि

प्. २४ पं. १४ वीरे स्थाने धीरे

.. १५ एय खु मुणी ∓धान एय मुणी

,, २१. लाधवमा० इत्यादिपंक्तिस्थाने एता-हशो नागार्जुनीय पाठभेद --एव सालु में उदगरण-लाघविय तव करम-प्रखयकारण करेड् ।

" २२ सब्बजो सब्बचाए स्थाने नागार्जुनीय पृ २७ ए १३ नो सुय॰ इत्यादि शाष्ट्रस्थाने चुर्णि पाठान्तरं सब्ब सब्बताए

,, २८ सधेमाणे स्थाने सन्धणाए, समुद्रिए स्थाने धमुहिए.

,, ३०, भणवकखमाणा स्थाने अणवकखेमाणा ( जे ), अवयमाणा, इति वा

प्र २५ पं १ तेहि महावीरोहि स्थाने चूर्णिपुस्तको तिस महावीराण

> २, उबलब्भ स्थाने पहलब्भ, हिमा उबब अहेगे फारुसिय समारभन्ति ।

, १५ जाइ स्थाने गन्माइ

ं २६ विद्धि इत्यादिशब्दस्थाने अवि-हिसना सुन्वया दन्ता अहेन पस्स ह्न्येषंरूपाःशब्दा , तथा-पता· ह्यो नागार्जुनीयः पाठभेदः—

" समणा भविस्सामी भणगारा अस्टि-चणा अपुत्ता अपस् अविद्विसगा सुव्यय दन्ता परदत्त-भोइणो, पाव कम्भ नो करिस्सामी " समुद्वाए ।

,, ३१ सया परक्रमेज्जासि स्थाने चूर्णि-पुस्तके सन्दर्भ परिव्युज्जासि.

पृ २६ पं. ६ भाइक्से वि धतत्यंक्तिस्थाने नागार्श्वर्नायमेतत्पाठान्तरम् -ने खल भिक्ख बहु-स्सूए बब्भागमे आहू-रण-हें द कुपले धम्म कहा लद्धि-सम्पन्ने खेल काल पुरिस समास्ट्रज ' के भय पुरिमे क वा दारिसण अभिसपन्ने 1 ' एव गुणजाईए पभू धम्मम्स आघ वेत्तए।

,, २० तम्हा जुहाआ नो परिवित्तवेउजा स्थाने चूर्णिपुस्तके अधिमे उधिणो नो परिवित्तसन्ति इति पाठान्तरम् ।

,, २४ विभोबाए स्थाने वियाघाए, वियावाए, विवायाए, विवाघाए, शति पाठा-

न्तराणि ।

,, २७ कालांबणीए**ः इत्यादि वाक्यस्थाने** नागार्जुनीया पठन्ति--जाइ मलु अह अपुण्णे भाड-तेउ-**काल** करिस्मामि, तो परिण्या-लोवे अकिसी टुगाइ-सम्पासम्य च भविस्मह ।

पुस्तके न एस धम्मे सुयक्लाए सुप-भने भवद एते शब्दाः ।

., २० उदाहिया स्थाने उदाहडा

., २३, पडिक्र स्थाने परिक, पाडियक, पडिइक, पडियद्भ, पाठान्तराणि, जीवेदि तत्रेव कम्भसमार-म्भेण स्थाने दण्ड समारभन्ते पाडा-

इन्यादिवाक्यस्थाने हिशा उवसम ए. २८. पं. ३. वेएमि स्थाने लाणिपुस्तके ( बहे-भणन्ति ) करोमे (ततुन जुज्बह).

,, २३. मोरनावर मेहा॰ इत्यादिशाध्वस्थाने सोच्चा मेहावी वयण प॰ ।

" २९. सनिहाण-सत्यस्य स्थाने चूर्णिपुस्त-के सनिदाणस्य खेयन (अनवायणाए) सीनहाणसत्यस्य से ।

# SOME INVALUABLE PUBLICATIONS FOR THE STUDENTS PALL AND PRAKRIT

1. Abhidhanappadipika ( A dictionary of the Pali langua	age )	b <b>y</b>
Moggallana Thera, edited in Devanagari with an index of th	e Wol	ds
by Muni Jinavijaya.		5-0-0
2. Palipathavali, A Pali Reader for beginners, by Muni Jin		
3. Prakritkathasamgraha, A Prakrit Reader for Be	eginn	
by Muni Jinavijaya		0-14-0
4 Kumarapalapranbodha, A rare Prakut work of ver		
importance edited by Muni Jinavijava (Gaekwai Oriental Seri		7-8-0
5. Chedasutrani (Brihatkalpa, Vyavahara and Nisutha		
invaluable books of the Jain Canon, edited for the first	time	
Devanagari 6. Supasanahacariyam, Life of the Seventh Jain Tirthan	)	2-8-0
Prakrit edited with sanskritisation of the Prakrit original	Karn	2-5-0
8 The Date of Hambbadra, An Essay in Sanskrit read	d hef	
the 1st Oriental Conference, Poons by Mum Jinavijaya	2 304 4	0-4-3
पाली-प्राकृत-भाषाजिज्ञासूनां कतिपया अत्यपयोगिग्र	-071+	
	न्याः	ŧ
<b>अभिधानप्पदीपिका (</b> पालीशब्दकीप ) सपाटक तुनि जिनविजय ;		
पका० गुजरात पुरासत्त्वमदिर, अमदाबाद.	<b>म्</b> ल्यम्	4-0-0
<b>पाली पाठावली.</b> सं. भुनि जिनविजयः	45	0-17-0
प्राकृत कथासंब्रह ,,	79	0-88-0
कुमारपाल प्रतिबोध: (पाञ्चनभाषामय सुमहान् बोधपद प्रन्य ) स०		
मुनि जिनविजयः,'गायकवाडम् ओरिएन्टर सिरीज' नामकप्रयमालाया प्रकटीम्न	1	19-/-0
त्रीणि छेदसूत्रणि (बहत्कत्य-व्यवहार-निर्शाध-नामिन जैनागमरहस्य	1. 97	
7		
मुतानि प्राचीनतराणि सिद्धान्तरःनानि )	13	₹-८-0
सुपासनाहचरियं (पाकृतभाषाप्रीयत सप्तमतीर्थकरचरितम्-		
सस्कृतच्छायाममन्वित प्राकृतभाषाजिजासूनामनविषेषकारक प्रत्यस्तम )	**	19-6-e
सुरमुन्दरीचरियं ( प्राकृतपद्यमयी सरठा सरमा मुबोबा कथा )	13	₹-८-0
<b>हरिभद्राचार्यसमयानिर्णय</b> ( अद्वितीय ऐतिहासिकनिबन्ध )		
हेखकः — मुनि जिन विजयः		o-K-e
	"	0
For books apply to - प्राप्तिस्थानम् -		
The Manager, Bharata Jain Vidyalaya. व्यवस्थापक-भारत जै	न विष	पालब,
Poons City. (Indis) पूना सीटि ( द		•
Tooms Only ( mans )	i diai	,